RAJBIL26868/2016/1284525
वर्ष 1 अंक 11 मूल्य 20

सामाजिक अभिरूचि का पर्याय

जयवर्द्धन

राजसमंद के प्रबुद्ध पाठक वर्ग की लोकप्रिय मासिक पत्रिका

liverajsamand.com

हिन्दी मासिक पत्रिका
जुलाई 2018
पेज संख्या : 36 राजसमंद
प्रकाशन तिथि : माह की 1 से 15 तारीख

नहीं संभले, तो बूंद बूंद को तरस जाएगा जीवन

अनन्ता इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज एण्ड रिसर्च सेन्टर
AIMS
एक विश्वास, बेहतर जिंदगी का
एक विश्वास, बेहतर जिन्दगी का
क्योंकि जीवन के साथ कोई
हमारी जिन्दगी जब भी खतरे में होती है उस समय हर एक पल महत्वपूर्ण होता है
स्टाफ एवं टेक्नीशियन की टीम जो आधुनिक नवीनतम चिकित्सा उपकरणों के साथ
ANANTA INSTITUTE OF MEDICAL SCIENCES & RESEARCH CENTRE
अनन्ता अस्पताल
सुपर स्पेशियलिटी सुविधाएं :
• न्यूरोसर्जरी • यूरोलॉजी
• कैंसर • नेफ्रोलॉजी
• बर्न, प्लास्टिक एवं कॉस्मेटिक सर्जरी
• हड्डी व जोड प्रत्यारोपण
मल्टी स्पेशियलिटी सुविधाएं :
• जनरल मेडिसिन • नेत्र रोग
• जनरल सर्जरी • मनोरोग
• स्त्री रोग एवं प्रसूती • चर्म रोग
• बाल एवं शिशु रोग • दन्तरोग
• नाक-कान-गला • टी.बी. एंड चेस्ट
अन्य सुविधाएं :
• 1.5 टेस्ला एम.आर.आई. • लेब की समस्त जाँचे
• 64 स्लाईस सी.टी. स्केन • 2D ईको एवं 4D सोनोग्राफी
• नियमित डायलिसिस • NICU, PICU की सुविधा उपलब्ध
• ब्लड बैंक • एम्बुलेंस • आई.सी.यू. जीवन रक्षक उपकरणों से युक्त
भामाशाह स्वास्थ्य बीमा योजना
• राजस्थान सरकार के सेवारत कर्मचारियों एवं पेंशनर्स के लिए अधिकृत हॉस्पिटल • ESIC सुविधा
TOLL FREE HELP LINE
1800-3000-0023
अनन्ता ग्राम, ने.हा. 8, उदयपुर रोड, नाथद्वारा - 313202 । फोन : 02953-334000, 97722-78635, 97722-78610

गायत्री पब्लिक सीनियर सैकण्डरी स्कूल, धोइन्दा
GPS
LKG TO XII (SCIENCE, ARTS, COMMERCE)
RBSE हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम
उत्कृष्ट बोर्ड परीक्षा परिणाम - 2018, जिला मुख्यालय पर नं. 1
सत्र 2018-19
प्रवेश प्रारम्भ
TOPPERS OF BOARD RESULT - 2018
12th SCIENCE
शिवानी पालीवाल 86.20%
प्रेरणा पालीवाल 85.80%
भूपेश पालीवाल 83.80%
शुभम लोहार 81.33% (PCM)
हरिओम सिंह 80% (PCM)
हर्षित पालीवाल 77.40%
12th ARTS
दिव्यंकल शर्मा 89%
महिमा पालीवाल 86.80 %
विनय झाखड़ 81.40 %
खुशबू कुंवर झाला 78%
खुशबू कुमावत 77.80%
नीतु सिंह सोलंकी 77.80%
पूजा सालवी 76.80%
गार्गी 21
12th COMMERCE
रीना वैष्णव 82 %
रिया शर्मा 79.40 %
सत्यनारायण कुमावत 79.40 %
कृष्णा पालीवाल 77 %
10th BOARD RESULTS
विशाल लोहार 91.83 %
दीपिका पालीवाल 90 %
दीपक झाखड़ 88.83 %
चंद्रपाल सिंह 84.83 %
ऋतिका कुंवर 82.83 %
भूमि पंड्या 77.83 %
हर्षिता पालीवाल 76.67 %
ऋचा द्विवेदी 76.17 %
CONTACT
PRINCIPAL 02952-221818
HITESH PALIWAL 8107221818
GIRISH PALIWAL 8875445599
HARIVALLABH PALIWAL 9314421818
E-mail : gpsdhoinda@gmail.com
visit us : www.gpsdhoinda.com

सम्पादकीय

सार्वभौमिक चिंतन जरूरी

भारतीय वैदिक संस्कृति में नदियों को माता का दर्जा दिया है। समय- समय पर नदियों की पुजा की जाती है, मगर आधुनिक समय में वैदिक संस्कृति के ह्रास में पौराणिक मान्यता उपेक्षित होती जा रही है। मानव सार्वभौमिक चिंतन संकुचित होकर सिर्फ स्वयं पर केन्द्रित हो गया है। ऐसे में सार्वजनिक समस्या के प्रति सोचने का कार्य सिर्फ राजनेताओं का रह गया है। आमजन उपभोक्तावाद में प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दुरुपयोग करता जा रहा है। सीमेंट की मजबूती ने प्रकृति को कमजोर कर दिया है। मार्ग पर सरपट दौड़ते पहियों ने नदियों का जलागम मार्ग अवरुद्ध कर दिया है। संगमरमर की चमक में पेड़ों की हरियाली लुप्त हो गई है। अपना कर्तव्य न समझते हुए प्रकृति के विनाश को नजरअंदाज करता जा रहा है। सार्वजनिक कार्य के लिए सिर्फ सरकार पर निर्भर हो गया है। सरकार व सत्ता की सोच व उनकी योजनाएं भी चुनाव जिताने तक ही केन्द्रित होकर रह गई है। राजसमंद में बनास नदी, चन्द्रभागा नदी, गोमती नदी व खारी नदी के सीने को छलनी कर अथाह रेती निकाल दी गई। नदियां दस से बीस बीस फीट तक गहरी हो गई है, जिससे क्षेत्र का भूजल स्तर गिरने से खेती में गिरावट के साथ पेयजल का बड़ा संकट खड़ा हो गया है।

सामाजिक अभिरूचि का पर्याय

जयवर्द्धन

website : liverajsamand.com

सम्पादक व प्रकाशक	ललिता राठौड़
निदेशक व उप सम्पादक	विजय शर्मा
संवाददाता	नरपतसिंह राठौड़
विज्ञापन प्रबंधक	जितेन्द्र शर्मा
ग्राफिक डिजाइन	महेन्द्रसिंह मोजावत
फोटोग्राफी	भरत पालीवाल (श्रीराम स्टूडियो)
वितरण सहयोगी	नारायण पालीवाल

कार्यालय पता : C/O शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट कांकरोली, जिला-राजसमंद, 9414239648, 9649813798

Email : jaivardhanpatrika@gmail.com

संपादक, प्रकाशक एवं स्वामी ललिता राठौड़ द्वारा राजसमंद से प्रकाशित एवं रमेशचंद्र आचार्य द्वारा आचार्य प्रिंटर्स हस्तिनापुर, कांकरोली, जिला राजसमंद राजस्थान से मुद्रित।

नोट : पुस्तक में प्रकाशित हर सामग्री में यथासंभव सावधानी रखी। फिर भी त्रुटियों के ध्यानाकर्षण के लिए धन्यवाद्। किसी विवाद के लिए न्याय क्षेत्र राजसमंद होगा।

इस अंक में खास...

1. **कवर स्टोरी 1 :** नहीं संभले, तो बूंद बूंद के लिए तरस जाएगा जीवन — पेज - 4
2. **कवर स्टोरी 2 :** औद्योगीकरण से जल-वायु प्रदूषित — पेज - 10
3. **कवर स्टोरी 3 :** क्या तीसरा विश्वयुद्ध पानी के लिए होगा ? — पेज -12
4. **माटी का लाल :** मोहनभाई ने पढ़ाया संस्कारों का पाठ — पेज - 14
5. **तीखी मिर्ची :** फोकटियो की फौज — पेज - 16
6. **समसामयिक खबरें :** दसवीं बोर्ड में बेटियों ने मारी बाजी — पेज- 17
5. **हमारी जिम्मेदारी :** निज पर शासन, फिर अनुशासन — पेज - 23
8. **कविताए:** 1. हां मैं हिन्दू आतंकवादी हूं 2. बचपन की बारिश — पेज - 24
9. **कॅरियर मंत्र :** दसवीं-बारहवीं में उपयुक्त विषय चयन ही छात्र के उज्जवल भविष्य का आधार — पेज - 27
12. **मेवाड़ी चौपाल :** घणी हमजणाई हाऊ नी — पेज- 30
1. **कड़वा सच :** रेनकोट ही रेनकोट — पेज - 33

आवश्यकता

मार्केटिंग और रिपोर्टिंग के लिए

पार्टटाइम/फुल टाइम ऊर्जावान युवकों की

जयवर्द्धन मासिक पत्रिका : संपर्क 94142-39648

हमारे क्षेत्रीय प्रतिनिधी जहां से आप जयवर्द्धन मासिक पत्रिका प्राप्त कर सकते हैं एवं वार्षिक बुकिंग कर सकते हैं।

भीम - हीरालाल भाट मो 99296396015

देवगढ़ - कमल शेख, 94147-86464

रेलमगरा - रोशनलाल दुकलिया मो. 9414927728

आमेट - मॉडर्न स्टेशनर्स, लक्ष्मी बाजार, आमेट

कुंभलगढ़ - शक्ति स्टेशनरी एवं स्पोर्ट्स, केलवाड़ा

गोमती चौराहा, चारभुजा- भीमराज कोठारी मो. 9610973283

बिनोल - हितेश दवे मो. 7023480406

कुंवारिया - विनय दाधीच मो. 7665005378

नाथद्वारा - कीर्ति स्टेशनर्स, नई सड़क

गजपुर - प्रभुदास वैष्णव मो. 7568485624

मोही - बाबूलाल कीर, मो. 98292-41423

नहीं संभले, तो बूंद बूंद को तरस जाएगा हमारा जीवन

जिले में 38 हजार सुख गए कुएं भीम-देवगढ़ तहसील क्षेत्र के ज्यादातर लोग पानी के लिए टैंकर के भरोसे

जयवर्द्धन न्यूज @ राजसमंद
liverajsamand.com

प्राकृतिक सौंदर्य, धार्मिक एवं ऐतिहासिक स्थलों के साथ खनिज सम्पदा के लिए देश में विशिष्ट स्थान रखने वाला मेवाड़ का राजसमंद जिला अब रेगिस्तान की चपेट में है। भीम-देवगढ़ तहसीलों की अधिकांश पंचायतों के गांवों में अनियमित बारिश की वजह से दो दशक से पेयजल की स्थायी समस्या है।

यह खुलासा जल संरक्षण एवं भूजल दोहन पर रोक लगाने के लिए राज्य जल नीति के तहत किए गए सर्वे में हुआ है। प्रदेश का 2 तिहाई से ज्यादा भाग रेगिस्तान के आगोश में है, जिसका क्षेत्र दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। राजसमंद के उत्तर एवं पश्चिम दिशा से प्रवेश करने वाला रेगिस्तान दो दशक से साख जमा चुका है। भीम एवं देवगढ़ क्षेत्र में सतही जल नाम मात्र का रह गया है और समूचा क्षेत्र सिर्फ भूजल पर ही निर्भर हो गया है। इसी कारण जिले में सर्वाधिक भूजल दोहन भीम क्षेत्र में 198 प्रतिशत एवं देवगढ़ में 111 प्रतिशत हो रहा है। पाली एवं अजमेर जिले की सीमा को छुने वाले राजसमंद के देवगढ़ एवं भीम क्षेत्र में एक दशक से पेयजल की स्थायी समस्या है, जहां गर्मी के वक्त हर साल प्रशासन को पेयजल की वैकल्पिक व्यवस्था के तौर पर टैंकरों के माध्यम से सप्लाई दी जाती है।

पौने 38 हजार कुएं अनुपयोगी

विभागीय सूत्रों के मुताबिक अनियमित बारिश की वजह से समूचे जिले में 38 हजार से ज्यादा कुएं एवं बावड़ियां अनुपयोगी हो चुकी है। इनमें अधिकांश कुएं तो स्थायी रूप से सूख चुके हैं, जबकि कुछ कुंओं में पानी आता भी है, तो बारिश के मौसम में ही रहता है। इसलिए पेयजल का संकट बढ़ता जा रहा है।

रीत गए एक तिहाई तालाब

बारिश एवं सतही जल के संरक्षण के लिए बने 439 तालाब, बांध एवं एनीकटों में से एक तिहाई तालाब व बांध एक दशक से स्थायी रूप से रीत गए हैं। वर्ष 2002 के बाद 145 तालाब एवं बांधों में पर्याप्त पानी नहीं आया है। जिले में सर्वाधिक भीम में 36 तालाब अनुपयोगी हो चुके हैं। उसके बाद देवगढ़ में 34, आमेट में 24, रेलमगरा में 21, कुंभलगढ़ में 13, नाथद्वारा में 11 एवं राजसमंद में 6 तालाब अनुपयोगी हो गए हैं।

अत्यधिक जल उपलब्धता का भ्रम

पाताल अप्रत्याशित जल उपलब्धता, नीचे नदियां बहने, वर्षा जल पीने लायक नहीं आदि बातों को लेकर आमजन में भ्रम की स्थिति है, जो गलत है। वास्तविकता में न तो जमीन में अप्रत्यशित जल उपलब्ध है और न ही अत्यधिक गहराई में जल की नदियां बहती है। इसके अलावा वर्षा जल का भी वैज्ञानिक ढंग से टांकों, बावड़ियों में एकत्रित किया जाए, तो यह पानी सबसे स्वच्छ व पीने योग्य है।

दो दशक से जिले के आधे खेतों में पानी के अभाव में नहीं हो रही रबी की खेती

जिले में अनियमित बारिश के कारण 20 हजार हैक्टेयर भूमि पर बुवाई होती ही नहीं है और अत्यधिक भूजल दोहन के कारण अगले 10 साल बाद लोगों को पेट्रोल एवं डीजल की तरह पानी खरीदना पड़ सकता है। घटते भूजल स्तर पानी में फ्लोराइड की मात्रा बढ़ गई है, जिससे बीमार लोगों की संख्या भी बढ़ गई है और अनियमित बारिश की वजह से उपलब्ध खेती योग्य भूमि में भी 20 हजार हैक्टेयर में बुवाई नहीं हो पा रही है।

ऐतिहासिक स्थल एवं बनास नदी के उद्‌गम स्थल के लिए प्रदेश में पहचाने जाने वाले राजसमंद जिले में खपत की दृष्टि से कृषि योग्य जमीन पर्याप्त है। भौगोलिक दृष्टि से 4 लाख 55 हजार हैक्टेयर में राजसमंद की बसावट है, जिसमें से कृषि योग्य भूमि 1 लाख 2 हजार हैक्टेयर है। अनियमित बारिश के कारण गत छह साल में खरीफ और रबी फसलों की उपज घट गई है। 1998 के बाद राजसमंद में उपलब्ध खेती योग्य पूरी जमीन में कभी भी बुवाई नहीं हुई। एक दशक में खरीफ फसलों की बुवाई भी अधिकतम 80 से 85 हजार हैक्टेयर भूमि पर ही हुई है, जबकि रबी फसलों की बुवाई तो उपलब्ध जमीन के मुकाबले आधी जमीन पर भी नहीं हो रही है। इसके अलावा अत्यधिक भूजल दोहन के कारण एक दश में राजसमंद में उपलब्ध पानी में फ्लोराइड की मात्रा दिनोंदिन बढ़ रही है, जिससे लोगों में कई तरह की बीमारियां फैलने की आशंका बन गई है और समूचे जिले में पश्चिमी राजस्थान की तरह स्थायी अकाल की आशंका है।

बढ़ता जल संकट और असहाय तंत्र

हमारे देश में जल को मुफ्त की चीज समझ के बर्बाद किया जाता है, जिसके कारण पानी के स्रोत निरंतर खाली हो रहे हैं और देश जल की कंगाली की ओर बढ़ रहा है। जल को स्वच्छ रखने का सामाजिक संस्कार हमारे समाज से गायब होता जा रहा है। संयुक्त राष्ट्र की एक रिपोर्ट के अनुसार दुनिया के लगभग 180 करोड लोग दूषित पानी पीने को मजबूर हैं और इस दूषित पानी के कारण दुनिया भर में हर साल लगभग 8 लाख 42 हजार लोगों की मौत होती है। वहीं, जल आपूर्ति करने वाली नदियों में प्रदूषण भी चिंताजनक स्तर पर है।

जब नदियां सूखने लगती हैं, तो इनसे जुड़े जलापूर्ति वाले क्षेत्रों को संकटमय स्थितियों का सामना करना पड़ता है। तमिलनाडु ऐसा राज्य है जहां नदियों के सूखने की वजह से लोगों की जान जा रही है और सूखा बढ़ने की वजह से किसान आत्महत्या कर रहे हैं। देश में तमिलनाडु सहित 18 राज्य ऐसे हैं, जहां सतही जल तेजी से कम हो रहा है। इनमें सबसे बुरी स्थिति तमिलनाडु की है। तमिलनाडु में लगभग 374 क्षेत्र ऐसे हैं जहां सतही जल की स्थिति बहुत चिंताजनक है। इसका कारण इन क्षेत्रों में जमीन से जितना पानी निकाला जा रहा है, उतना पानी जमीन को वापस नहीं मिल पा रहा है। केवल तमिलनाडु ही नहीं, दक्षिण भारत के कर्नाटक और केरल में भी सूखा पड़ने की संभावनाएं हैं। कर्नाटक, केरल और तमिलनाडु के जलाशय इस हद तक सूख चुके हैं कि आने वाले दिनों में इन राज्यों में पीने के पानी की कमी हो सकती है। सेंट्रल वाटर कमीशन की रिपोर्ट के अनुसार देश के 91 बड़े जलाशयों में क्षमता के मुकाबले सिर्फ 41 फीसदी पानी मौजूद है। इसी रिपोर्ट के अनुसार तमिलनाडु, केरल, कर्नाटक, तेलंगाना और आंध्रप्रदेश के 31 जलाशयों में सिर्फ बीस फीसदी पानी बचा है। अंतरराष्ट्रीय संस्था वाटर ऐड के अनुसार ग्रामीण भारत में करीब छह करोड़ 50 लाख लोगों तक स्वच्छ पानी की पहुंच नहीं है। वर्ष 2050 तक दुनिया के अलग-अलग क्षेत्रों में निवास करने वाली 40 फीसदी आबादी ऐसी होगी, जहां पानी की उपलब्धता बहुत कम होगी।

बेकाबू आबादी से बढ़ रहा संकट

बढ़ते जलसंकट की सबसे बड़ी वजह जनसंख्या है। वर्तमान में दुनिया की जनसंख्या 750 करोड़ है और वर्ष 2030 तक यह 830 करोड़ तक पहुंच जाएगी। ऐसी स्थिति में पीने के पानी की मांग भी बहुत ज्यादा बढ़ जाएगी। अंतर्राष्ट्रीय एजेंसियों के मुताबिक 2022 तक भारत की जनसंख्या दुनियां में सबसे ज्यादा हो जाएगी। भारत के किसान चीन के मुकाबले दुगने भूमिगत जल का इस्तेमाल करते हैं। इस कारण जनसंख्या बढने से आने वाले समय में देश के कृषि क्षेत्र में पानी की मांग में भी इजाफा होगा। इस समय पूरे देश में भीषण गर्मी पड़ रही है और इस गर्मी में पानी की किल्लत लोगों की सबसे बड़ी परेशानियों में से एक है। देश की राजधानी से लेकर दूरदराज गांव तक बुरा हाल है। यह भारत के महाशक्ति बनने के सपने पर पानी फेरने वाली स्थितियां हैं। अगर परिस्थितियां यही रहीं तो आने वाले समय में महाशक्ति बनने के सपने देखने वाला भारत बूंद-बूंद पानी के लिए तरस जाएगा। पानी के क्षेत्र में कार्य करने वाली बड़ी कंसल्टिंग फर्म ई ए वाटर के अध्ययन के अनुसार 2025 तक देश पानी की भयानक कमी वाला देश बन जाएगा। इसी अध्ययन के अनुसार देश का सतही जल तेजी से कम हो रहा है। वहीं, दुनियाओं के जल संकटग्रस्त 20 बड़े शहरों में भी 5 भारतीय शहर शामिल हैं। लोकसभा में सरकार ने माना है कि देश के लगभग तीन लाख गांवों में पीने के पानी की सप्लाई नहीं है और 66 हजार गांव ऐसे हैं। जहां उपलब्ध पानी बहुत दूषित है। पानी का यह संकट सिर्फ भारत के लिए ही नहीं है। पूरी दुनियां आने वाले इस संकट से परेशान हैं।

50 वर्षों में 800 गुना बढ़ी पानी की खपत

दुनियां के हर छह में से एक व्यक्ति को इस संकट का सामना करना पड़ रहा है। वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम में जल संकट को दस बड़े खतरों में जगह दी है। दुनियां की छियासी फीसद से अधिक बीमारियों की वजह भी दूषित जल ही है। देश में जल स्तर हर वर्ष दो से छह मीटर तक नीचे जा रहा है। जिसकी बड़ी वजह कंट्रक्शन कंपनियां हैं। सूखा और पानी की कमी की वजह से महाराष्ट्र के मराठवाड़ा और विधर्व पलायन की बड़ी वजह बन गए हैं। महाराष्ट्र के सूखाग्रस्त इलाकों से पिछले चार वर्षों में 25 लाख से ज्यादा लोग पलायन कर चुके हैं। मराठवाड़ा इलाके को पानी उपलब्ध कराने वाले ग्यारह छोटे बांध भी पूरी तरह से सूख चुके हैं। संयुक्त राष्ट्र की 2015 की रिपोर्ट के अनुसार अगर दुनिया के देशों ने पानी बचाने पर कार्य नहीं किया तो अगले 15 वर्षों में दुनिया को 40 फीसदी पानी की कमी का सामना करना पड़ सकता है। पीने के पानी के अभाव में डायरिया जैसे रोगों से रोज लगभग 2300 लोगों की मौत होती है। पिछले 50 वर्षों में दुनियां की आबादी में तीन गुना वृद्धि हुई है, जबकि पानी की खपत 800 गुना तक बढ़ चुकी है। इसी कारण पानी का संकट आज दुनियां का सबसे बड़ा संकट बन गया है।

सरकार कब करेगी समाधान ?

फिलहाल देश में औसतन एक नागरिक को 150 लीटर पानी उपलब्ध है। आने वाले समय में पानी की यह उपलब्धता 70 से 75 ली तक रह सकती है। यह एक खतरे की स्थिति है। ऐसे में सवाल यह है कि जल संकट को हराने के लिए सरकार और तंत्र के पास कितनी इच्छाशक्ति है ? यह वह समस्याएं हैं जिनके बारे में कोई बात करना नहीं चाहता लेकिन, देश की असली समस्या यही है। सरकार को जल संकट की समस्या के समाधान के लिए दूरदर्शी और दीर्घकालिक उपाय करने होंगे। कोई भी सरकार जल संकट का अपने स्तर पर तब तक समाधान नहीं कर सकती, जब तक कि समाज की उस में भागीदारी ना हो। खेती में जल संकट की समस्या के समाधान के लिए सरकार को कम पानी से पैदा होने वाली फसलों के उत्पादन को बढ़ावा देकर, उन्हें उचित दाम में खरीदना चाहिए। ताकि किसान कम पानी वाली फसलें उगाने को प्रोत्साहित हों। कई फसलों को साथ उगाने से भी पानी की खपत घटती है। इन बातों का ध्यान करके कृषि विकास के तरीकों में मौलिक बदलाव की जरूरत है। विज्ञान और पर्यावरण के ज्ञान से मानव ने जो प्रगति की है। उसे प्रकृति संरक्षण में लगाना जरूरी है। तमिलनाडु ने वर्षा के पानी का संरक्षण पर जो मिसाल कायम की है। उसे सारे देश में विकसित करने की जरूरत है। विडंबना यह है कि सरकार के पास जल संरक्षण की कोई समेकित नीति नहीं है। अगर कोई योजना कहीं सफल हो जाती है तो सरकार उसी के पीछे पड़ जाती है। मसलन पिछले वर्षों तालाब निर्माण का फैशन चल पड़ा लेकिन, भारत में केवल तालाब निर्माण से समस्या हल नहीं हो सकती है। इसके साथ ही साथ हमें जंगल बचाने, नहर बनाने, बांध बनाने जैसे उपाय भी करने होंगे। बेहतर होगा अगर विभिन्न जल संरक्षण योजनाओं का पैसा परंपरागत स्रोतों को फिर से जिंदा करने में खर्च किया जाए। जल संरक्षण में वृक्ष भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसलिए वृक्षारोपण को बढ़ावा देना होगा। कई राज्यों में प्राकृतिक जल स्रोतों की देखरेख के लिए अलग से विभाग है। जलाशयों में बढ़ते प्रदूषण को रोकने के लिए योजनाएं बनाते हैं, मगर यह योजनाएं कागजों पर ही रह जाती हैं। उपरोक्त सभी विषयों को जलवायु परिवर्तन जितनी ही गंभीरता से लेना चाहिए, क्योंकि पानी प्रत्येक व्यक्ति के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण है और इसकी कमी मानवीय स्वास्थ्य एवं वैश्विक राजनीति दोनों को ही प्रभावित करेगी। अत: पानी को एक समस्या के रूप में मान्यता मिलनी चाहिए तथा इसके निराकरण को वैश्विक एवं राष्ट्रीय एजेंडे में सर्वोच्च स्थान मिलना चाहिए।

अश्विनी शर्मा
स्वतंत्र टिप्पणीकार
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
मो. 9079006588

पर्यावरण संरक्षण, संवर्धन और विकास

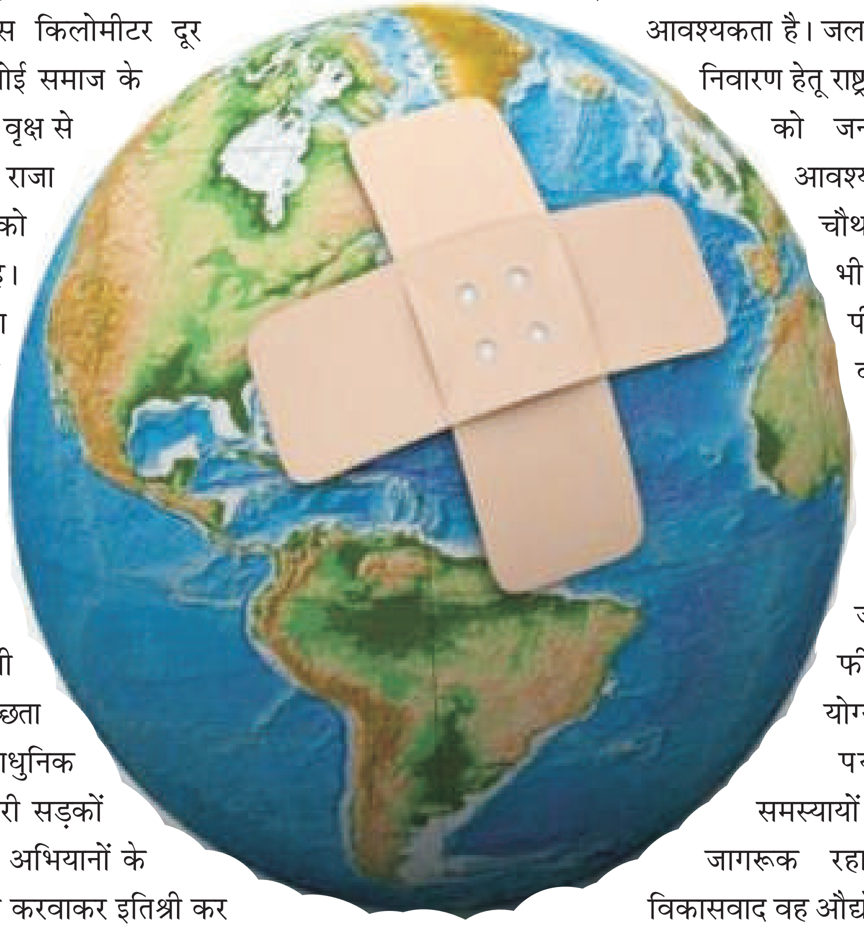

चित्तौड़ के युवराज उदयसिंह को बचाने के लिए अपने पुत्र का बलिदान कर देने वाली पन्नाधाय जैसी मां के जैसे ही राजस्थान की वीर प्रसुता भूमि में एक 'खेजड़ी' वृक्ष को बचाने के लिए तीन सौ तिरेसठ वीर स्त्री- पुरुषों का बलिदान रेत के धोरों पर लिखी एक महान गाथा हैं। सन् 1730 ई. की यह घटना जोधपुर से महज़ पच्चीस किलोमीटर दूर खेजड़ी गांव की हैं। विश्नोई समाज के लोग एक एक कर खेजड़ी वृक्ष से लिपटते गए और जोधपुर राजा के तत्कालीन कारिंदे उनको कुल्हाड़ियों से काटते रहे। उन प्रर्यावरण प्रेमियों का एक ही लक्ष्य था, 'सिर सांचे रूंख रहे तो भी सस्ता जांण' अर्थात सिर कटने पर भी वृक्ष बचे तो भी सस्ता मान।

पर्यावरण की बात करें, तो यह जानना भी जरूरी है कि कैसे स्वच्छता अभियानों में खोए आधुनिक समाज के लोग साफ सुथरी सड़कों पर झाड़ू लगाकर स्वच्छता अभियानों के चित्र अखबारों में प्रकाशित करवाकर इतिश्री कर लेते हैं और नतीजा ढाक के तीन पात। पर्यावरण और स्वच्छता अभियानों में अपना अहम योगदान देने वाले पुरोधा तथा आधुनिक 'दधीचि' सुभाष कश्यप का उल्लेख सामयिक है। प्रकृति के प्रति इनका इतना लगाव रहा कि इन्होंने अपनी देह दान कर दी। प्रकृति के प्रति कार्ययोजना करते हुए अपना परिवार बचाना भी मुनासिब नहीं समझा। ठेठ देहाती गांव वाजिदपुर से अपनी मेहनत लगन से भारतीय सेना में भर्ती हुए। 1997 ई. से 2012 ई. तक देशसेवा करने के पश्चात रिटायरमेंट के तुरंत बाद समाजसेवा और पर्यावरण स्वच्छता का बीड़ा उठाया। लगातार तीन वर्षों तक जन जागरूकता शिविरों के आयोजन किए। पांच हजार से ज्यादा पौधे रोपित पर्यावरण संरक्षण क्षेत्र में नए सोपान स्थापित किए।

सारी दुनिया जानती है कि पर्यावरण और जीवन का अन्योन्याश्रित संबंध है। तथापि हमें यह अलग से पर्यावरण दिवस मनाकर संरक्षण, संवर्धन और विकास का संकल्प लेने की आवश्यकता पड़ रही हैं। पर्यावरण की गुणवत्ता के संरक्षण के लिए सम्पूर्ण मानव जाति को आज ठोस कदम उठाने की आवश्यकता है। जल, वायु पर्यावरण प्रदूषण के निवारण हेतू राष्ट्रव्यापी कार्यक्रम की योजना को जन आंदोलन बनाने की आवश्यकता है। पृथ्वी का तीन चौथाई हिस्सा जलमग्न हैं। फिर भी करीब 0.3 फीसदी जल ही पीने योग्य है। विभिन्न उद्योगों व मानव बस्तियों के कचरे व रासायनिक तत्वों ने नदियों, नालों, तालाबों, झीलों के जल को प्रदूषित कर दिया है। पीने योग्य जल में से भी सिर्फ 30 फीसदी जल ही वास्तव में पीने योग्य रह गया है।

पर्यावरण प्रदूषण की समस्यायों पर यूं तो सदियों से मानव जागरूक रहा है, परन्तु आधुनिक विकासवाद वह औद्योगिकीकरण से मानव जाति में बढ़ते खतरों प्रति जागरूकता लाने के लिए संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (UNEP) का जन्म हुआ। 1972 ई. को संयुक्त राष्ट्र संघ ने स्टोकहोम (स्वीडन) में विश्वभर के देशों का पहला पर्यावरण सम्मेलन आयोजित किया और 'एक पृथ्वी' का सिद्धांत माध्यम किया। 5 जून को पर्यावरण दिवस के रूप में आयोजित करके नागरिकों को प्रदूषण की समस्यायों से अवगत कराने का निश्चय किया गया। भारत में 19 नवम्बर 1986 ई. को पर्यावरण संरक्षण अधिनियम लागू हुआ। तदनुसार जल, वायु, भूमि। इन तीनों से संबंधित कारक तथा मानव, पौधे, सुक्ष्मजीव, अन्य जीवित पदार्थ पर्यावरण के अंतर्गत स्थान दिया गया। उक्त अधिनियम का उल्लंघन करने वालों पर कठोर दंड का प्रावधान है।

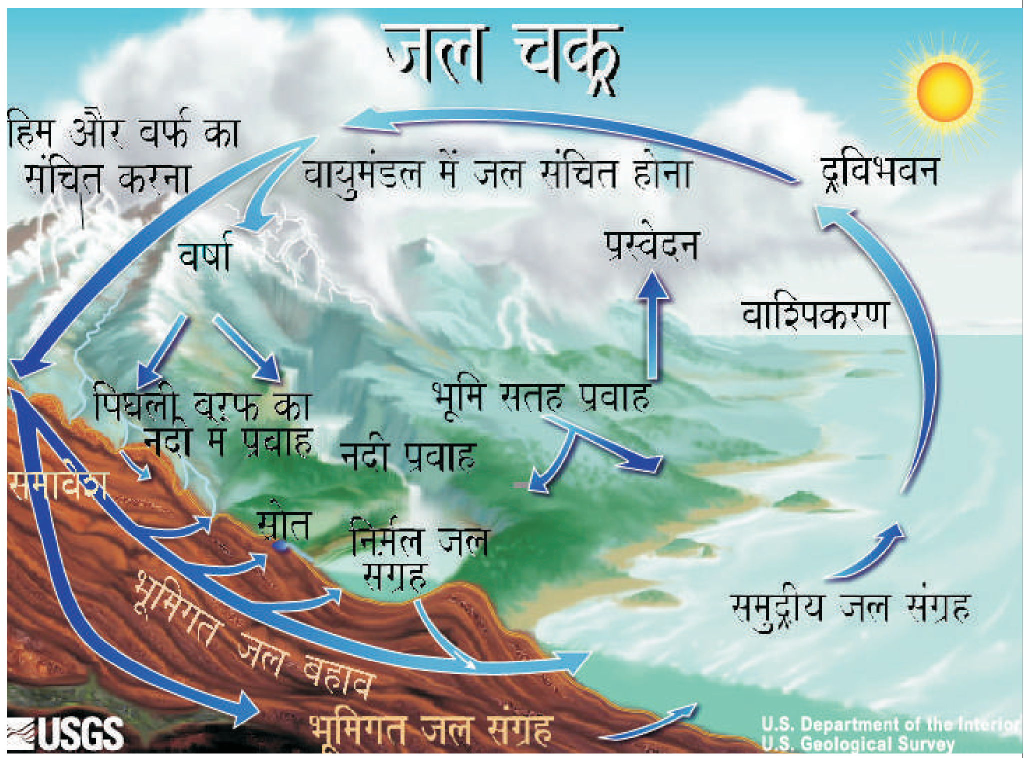

आज दुनियाभर के ग्लेशियर पिघल रहे हैं। प्लास्टिक कचरा जमीन और समंदर की तलहटियों में जमा हो रहा हैं। सरकार और सरकारी नुमाइंदे प्लास्टिक फैक्ट्रीज को सरकारी संरक्षण देकर अपनी जेबें भर रहे हैं। आपदाओं का विस्तार हो रहा है। सीमेंटेड विकास में अगर सबसे ज्यादा कोई परेशान हैं तो वह आम आदमी है। रेत और खनन माफियाओं ने नदियों के पेटों को छलनी कर दिया हैं। नदियां मर रही है।

भूमिगत जलस्तर घटने लगा है। वन माफिया चांदी कूट रहे हैं। हजारों बेशकीमती पेड़ काटे जा रहे हैं। भूमि कटाव से केदारनाथ जैसी आपदाएं सैकड़ों जीवन को लील जाती हैं। निर्दोष लोग जलवायु परिवर्तन की मार सबसे ज्यादा देर रहे हैं। वायु प्रदूषण से दूर पहाड़ों में आसमान देखना मुश्किल हो गया है। हवा और धुंध अपने साथ मिट्टी के कणों में शामिल वाहनों से निकले रासायनिक कण लेकर पहाड़ियों पर्वतों पर स्थित वनों पर छोड़ती है, जिससे पेड़ों की पत्तियां जहरीली हो जाती है। बरसाती पानी से यह रसायन मानव तक पहुंच रहा हैं। अन्न उत्पादों, फलों में जहर बढ़ रहा है। इससे देश में भूख, गरीबी, बीमारियों का नया दौर प्रारम्भ होने लगा है।

प्रकृति में उपस्थित सभी प्रकार के जीवधारी अपनी वृद्धि विकास तथा सुव्यवस्थित एवं सुचारू जीवन चक्र चलाते हैं। इसके लिए संतुलित वातावरण पर निर्भर रहना पड़ता है। वातावरण एक निश्चित संगठन होता है।

इसमें सभी प्रकार के जैविक और अजैविक पदार्थ एक निश्चित अनुपात में पाए जाते हैं। कभी कभी वातावरण में एक या अनेक घटकों का प्रतिशत मात्रा किसी मानवीय हस्तक्षेप से कम या ज्यादा हो जाती है, तब यह प्रदूषित पर्यावरण जीवधारियों के लिए अत्यधिक हानिकारक हो जाती है। यह हवा, पानी, मिट्टी, वायुमंडल आदि को भी प्रभावित करती हैं। इसे ही पर्यावरण प्रदूषण कहते हैं। विज्ञान का उपयोग, प्रकृति का अंधाधुंध दोहन, अवैध खनन, गलत निर्माण तथा विनाशकारी पदार्थों का उत्पादन आज बड़े पैमाने पर किया जा रहा है। इससे वातावरण प्रदूषित हो रहा है, जिससे प्रकृति और प्राणीमात्र का जीवन संकट में पड़ गया हैं।

पर्यावरण की सुरक्षा आज सबसे समस्या है। इसे सुलझाना हम सब की जिम्मेदारी है। इसे हमें प्रथम प्राथमिकता प्रदान करनी चाहिए। इसके प्रभाव से आज सम्पूर्ण विश्व बीमार है। स्वच्छ पर्यावरण आज की जरूरत है, पर्यावरण निरोग तो हम निरोग।

गोविन्दसिंह चौहान
भीम, राजसमंद

औद्योगीकरण से जल-वायु प्रदूषित, खनन से पहाड़ों की हरियाली खत्म

हमारे चारों ओर जो परिदृश्य हमें घेरे हुए हैं, उसे परि + आवरण यानि पर्यावरण कहते हैं। यह प्रकृति संज्ञा से जाना जाता है तथा इसके मूल पांच तत्व हवा, पानी, अग्नि, पृथ्वी एवं आकाश 'पंचभूत' नाम से शास्वत रहते हैं। वेदो ने भी कहा है- 'पिंड में है, वही ब्रह्मण्ड में है' तथा गोस्वामी श्री तुलसीदास जी ने भी राम चरितमानस में कहा है, ''पंचभूत यह अद्यमशरीरा''

इस प्रकृति तत्वों से ही पृथ्वी यानि मृत्युलोक के जीवो की रचना हुई है, जिनमें जलचक्र, नभचर, उदभिज व थलचर की चौरासी लाख यौनिकयां गिनाई गई है। इस प्रकृति का स्थूल रूप नदियां, पहाड़, सागर, वृक्ष, अनन्त में घूर्णन करते अनेकानेक पिण्ड झरनें आदि है। इस प्रकृति के अन्दर व बाह्य कई घटनाएं हर समय घटित होती रहती है। जैसे कि जीवों के मन की कल्पनाएं पल पल में उठती-मिटती रहती है। इन्हें ही प्रकृति के आन्तरिक एवं बाह्य परिवर्तनकारी घटनाओं के नाम से पुकारते हैं। इनमें भूकम्प, ज्वालामुखी, तूफान, अतिवृष्टि, भीषण गर्मी, शीत व विश्व में हलचल मचा देने वाला जलजला। इसी प्रकार जीवों के मन में उथल पुथल उसकी स्वयं की प्रकृति की ही देन है। अत: हम कह सकते हैं कि हमारे मन की प्रकृति का असर बाह्य पर्यावरण पर पड़ता है और बाहरी पर्यावरण की हलचल का जीवों के मन पर परिवर्तन पैदा करता है। यही कारण है कि कुछ तिथियों पर चन्द्रमा का आकर्षण- विकर्षण पागल व्यक्तियों की कार्यप्रणाली को प्रमाणित करता है। जैसे अमावस्या, पूर्णिमा को सागरों का पानी ज्वारभाटा पैदा करता रहता है। इसलिए भारतीय ज्योतिष में मन का देवता चन्द्रमा माना गया है और आत्मा का सूर्य।

अत: विज्ञान ने सिद्ध कर दिया है कि ज्योतिष विज्ञान मानव प्रदत्त नहीं है, अपितु ईश्वरी गणित है। आचार्य रजनीश ने भी कहा है कि ज्योतिष कुदरती विज्ञान है। आज से हजारों वर्षों पूर्व हमारे वैज्ञानिक ऋषियों ने इसीलिए इस पर्यावरण की सुरक्षा के लिए धर्म से जोड़कर धारणाएं कायम कर दी थी। भारतीय संस्कृति में पर्वतों की पूजा, नदियों का देवी रूपामान पूजा, वृक्षों में और पशु पक्षियों को देवी-देवताओं के वाहन बताकर उनकी सुरक्षा के लिए मानव को समझाया। श्रीराम से गरुड़, वानर, रींछ को को रामायण में जोड़ा, तो श्रीकृष्ण से गौचारण, गौरस, गौवर्द्धन पूजा, जमुना से नदियों का महत्त्व तथा गिरीराज पर्वत की पूजा कर कृषि संस्कृति, पशु संरक्षण व प्रकृति शुद्धिकरण का संदेश ग्वालों को दिया। हमारा भारतीय दर्शन जिसने यज्ञों द्वारा अग्नि, वायु, जल, आकाश व पृथ्वी पांचों तत्वों की शुद्धिकरण की प्रक्रिया से जीवन रक्षा का महामंत्र मानव जाति को दिया था। पीपल पूजन व तुलसी पूजन के महत्त्व से घर घर में ऑक्सीजन की सुरक्षा की। प्रकृति का जीवनचक्र की थ्योरी हमारे ऋषियों ने धर्म से क्रियाओं को जोड़कर सहज में ही समझा दी।

आत्म तत्व आकाश है, माटी रूप शरीर।
जठरानल, जल के सहित, पंचमृतत्व समीर।।

सबसे प्रथम तत्व प्राणवायु को जीवन माना गया है, जिसे विज्ञान ऑक्सीजन कहती है और इसे 0 सूत्र से प्रदर्शित किया गया है। पुराने लोगों ने कहा है 'एक हवा और सौ दवा' बराबर है। पानी को H_2O सूत्र से दिखाया जाता हैयानि यह हाईड्रोजन व ऑक्सीजन का कम्पाउंड है।

धरती का भूजल लेवल गहरा चला गया। राजसमंद की जलवायु रायसागर (राजसमंद झील) के भरे रहने पर समशीतोष्ण प्रभाव कला माना गया था, किन्तु वर्तमान के औद्योगीकरण के कारण इसमें वायु व जल दोनों प्रभावित हुए हैं। यहां की अरावली प्राचीन पर्वतमाला आज से 50 वर्ष पूर्व हरे भरे पड़ों से आच्छादित थी। नदियां तालेड़ी व गोमती छह छह माह तक अविरल बहा करती थी। राजसमंद के निर्माण के दो सौ वर्षों तक ऊपर से छलकते नालों के पानी से आसोटिया मौजा की पिलाई होती थी। जल स्वच्छ मोती सा चमकता संगमरमरी सीढ़ियों को प्रतिबिम्बित करता रहता। जल पक्षी व मगर तथा मछलियां पानी को शुद्ध करते रहते और आबादी एक बंटा चार ही थी। नगर की बसावट सागर तल से नीचे होने की वजह से गंदे नाले नहीं गिरते तथा पहाड़ियों में खदाने नहीं थी, जिससे शोर व मार्बल स्लरी जल में घुलकर बरसाती पानी के साथ तालाब में नहीं आती थी।

हवा घने जंगल होने से शुद्ध थी। दुपहिया व चार पहिया वाहन नहीं थे। यहां सिर्फ तांगे चलते थे तथा छुटपुट साइकिलें थी। आजादी के बाद कई रासायनिक पदार्थों व जहरीले प्लास्टिक के जलाए जाने के कारण यहां की हवा व सागर का पानी जहरीला हो गया है। मार्बल स्लरी व अंग्रेजी बबूल की पत्तियों के कारण कई बार पानी विषाक्त हो गया। मछलियां मर गई। लोगों को पथरी व घुटनों की बीमारियां हो गई। ईंट भट्टों व राष्ट्रीय राजमार्ग आठ व राज्यमार्ग नं. 12 के वाहनों ने पर्यावरण को दूषित किया है तथा ध्वनि प्रदूषण भी पैदा किया है। लोग ताबूत नवरात्रि का, खराब राख फूल आदि तालाब में डालने लग गए। माटा मोहल्ला, मंदिर के कुछ नाले राजसमंद झील में गिरने लगे। लोग मछलियों का शिकार करने लगे तथा खाली किनारों पर गन्दगी फैलाने लगे, तो हवा व पानी दूषित हो गया। हर वर्ष पूरा बरसाती पानी नहीं आने से व कृषि कार्य में पानी को बर्बाद करने की राजनीति प्रवृत्ति भी यहां के हवा पानी को प्रदूषित करने में सहभागी रही है। सफाईकर्मी पाल की सफाई का कचरा या तो जल में गिरा देते हैं या चौहटों पर जला देते हैं, जिससे वायु प्रदूषण व जल प्रदूषण बढ़ ही रहा है। संगमरमरी सुंदर पत्थर भी चटक गए हैं। क्यों नहीं, हमारे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के सफाई अभियान के तहत नगरपरिषद के पार्षद इस व्यवस्था को व्यवस्थित करावें।

नगर में प्लास्टिक थैलियां व आईटम प्रचुर चलन ने वायु, जल व पशुधन को बहुत हानि पहुंचाई है। खेतों की बर्बादी, नगरों का विस्तार व राष्ट्रीय सड़कों व अनियंत्रित वृक्षों की कटाई के कारण हो रही है। फलों, अनाज व सब्जियों में रासायनिक खादों के प्रयोग व फल पकाने की प्रक्रियाओं ने लोगों को स्लो पोइजन का आदी बना दिया है। शरीर बीमारियों का घर बन गया है और मिट्टी जहरीली बन गई है। कण्डे व लकड़ी की कमी व गैस के चूल्हो ने भी पर्यावरण को प्रदूषित किया है। अब यज्ञ की जगह रासायनिक हथियारों के परीक्षण व फैक्ट्रियों के जहरीले धुएं से औजोन परत क्षतिग्रस्त हो गई है। प्रकृति के पांचों तत्व हमारे राजसमंद क्षेत्र के भी अन्य बड़े नगरों की तरह विषाक्त हो चले हैं। हमें इस और चिंतन करने की आवश्यकता है।

यह करें, आवश्यक सुझाव

- हम राजसमंद झील में गन्दगी न डाले तथा गणेश, माताजी की मूर्तियां व ताजिया ठंडे करने के लिए नगरपरिषद की मदद से तालाब किनारे सीमित जल कुंड का निर्माण कर सभी धार्मिक पूजा पाठ की सामग्री उसमें डलवाए।
- राजसमंद झील के किनारों पर शौच जाने व पैशाब करने की अलग से व्यवस्था कराएं।

यहां वैष्णव मंदिर व जैन तीर्थ है। अतः मछलियों का शिकार वर्जित कानून करावें व चौकसी रखें।

- प्लास्टिक-कचरा सफाईकर्मी व गृहणियां जल में न डाले व न जलावें।
- मार्बल कटर की स्लरी व टुकड़े नदियों व समुद्र के किनारे न डालने दें। पाल व खाली किनारों के बबूल की झाड़ियां प्रशासन हर वर्ष कटवा कर सफाई का ध्यान रखें। नगरपरिषद की कचरा निस्तारण गाड़ी का उपयोग लें।
- कचरा रोड से व शहर की नालियों से सफाईकर्मी निकालकर रोड पर न जलावें, दूर स्थल पर डम्पिंग करें।
- वाहन के ध्वनि यंत्रों में साइलेंससर लगाएं व कार्बन छलनी का प्रयोग करें।
- आवारा पशुओं, कुत्तों व सुअरों द्वारा गन्दगी व अव्यवस्था नगरपरिषद रोके।
- हरे वृक्षों की कटाई रोकें तथा खदानों, नदियों व जल का अतिदोहन न करें।
- हर बालक- बालिका अपने जन्मदिन पर एक पौधा लगाकर संरक्षण करें।
- भारतीय यज्ञ क्रियाएं भूमंडल को शुद्ध करती थी। आज कसार, मोलेला, केलवा में इस तरह का प्रशिक्षण हो रहे हैं। गायत्री शक्तिपीठ में भी होते हैं।
- शहर के शौचालय की नित्य सफाई व कीटनाशक छिड़काव व्यवस्था हो।
- नगरपरिषद हर मोहल्ले में कूड़ादान व सफाई व्यवस्था देखने के पार्षद को निर्देश दें तथा हर गन्दगी फैलाने वाले नागरिक को टोकने, बोर्ड लगाकर या न्याय द्वारा शिक्षित करें। इस तरह लिखवा सके हैं- 'आओ हम मिलकर करके पर्यावरण सुधारें, बढ़े प्रदूषण पड़ जाए संकट में प्राण हमारे।'

फतहलाल गुर्जर 'अनोखा'
वरिष्ठ इतिहासकार, जाट गली
कांकरोली, मो. 99286-25757

क्या तीसरा विश्वयुद्ध पानी के लिए होगा?

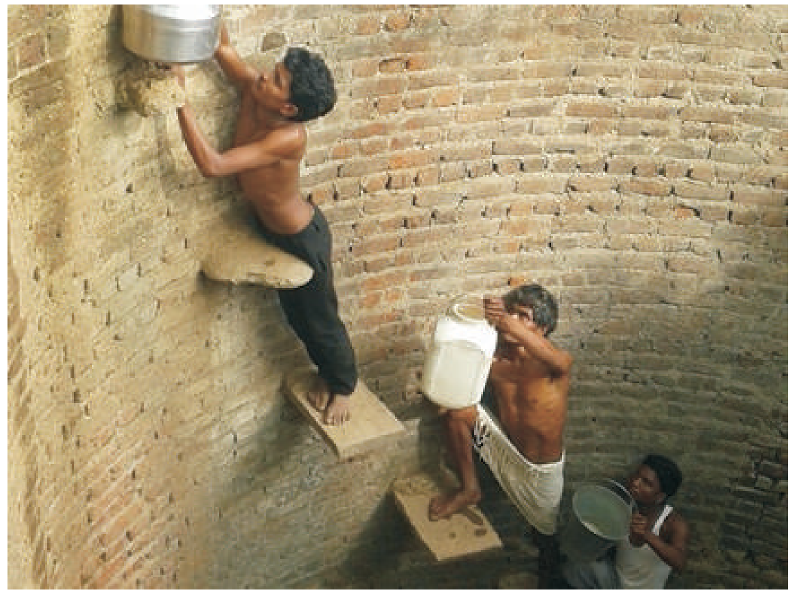

जल ही जीवन है, जल है तो कल है, बून्द बून्द जल बचाओ... ये मात्र नारे या दीवारों और किताबों में लिखे विचार नही है, जो पढ़कर नज़रअन्दाज़ कर दिया जाए। आज अर्थ प्रदान समाज की तरफ दुनिया बढ़ रही, सभी को धन, सम्पदा, मान सम्मान, यश प्रसिद्धी चाहिए। जैसा देश, वैसा भेष, दुनिया का नियम है। देखा देखी की भक्ति सभी करते है, जो आपको चाहिए, वो सभी को चाहिए। बच्चे का स्वभाव होता है, उसे वही खिलौना चाहिए, जिससे दूसरा बच्चा खेल रहा है। इस मानसिकता ने दुनिया को अजीब सी प्रतिस्पर्द्धा में चलने को मजबूर कर दिया है।

भोगवादी संस्कृति ने दुनिया को उस मुकाम पर लाकर खड़ा कर दिया, जिस जगह दुनिया का अस्तित्व खतरें में पड़ता सबको नज़र आ रहा है और समाधान किसी के पास नहीं है। सब एक दूसरे को उलाहना देकर बात खत्म कर देते हैं। सकारात्मक प्रयास कोई करना नहीं चाहता। आज हिन्दुस्तान की बात करें, तो सदियो सदियो से निरन्तर बहने वाली गंगा, जिसे अमृत कहकर भारतीय लोग पूजते हैं। हिन्दू संस्कृति में तो इसे पवित्र जल मान कर पूजा और अनुष्ठान में इसका जल काम में लेते हैं और पाप धोने वाली मां मानते हैं। मृत्यु के बाद अस्तियों को इसमें बहाया जाता है, मगर आज गंगा सूखने के कगार पर आकर खड़ी हो। सिर्फ़ कुछ धारा ही गंगोत्री की गौ मुख से निकलकर आ रही है। ग्लेशियर ग्लोबल वार्मिग से पिघल खत्म हो रहा है। अलखनन्दा और भागीरथी की सहायक नदियों ने गंगा के अस्तित्व को बचा रखा है।

आबादी के दबाव और प्रदूषण से इलाहाबाद तक आते आते गंगा गन्दे नाले में तब्दील हो जाती है। जब गंगा का ये हाल है, तो छोटे मोटे ताल, तलैया कुएं, बावड़ी, नदी नालो पर संकट आना लाज़मी है। आज ग्लोबल वार्मिंग की समस्या और वायुमंडल के प्रदूषण ने प्रकृति में जीव, जन्तु, मानव सभ्यता को मृत्यु के कगार पर ला दिया है। आपका कमाया यही छूट जाता है। साथ कुछ नहीं जाता, मगर आपकी कमाई सम्पदा आपकी आने वाली पीढ़ियों के काम आएगी। ये समाज में आम धारणा है और सही भी है। मगर मैं आपको यह कहूं कि आपकी आने वाली पीढ़ियों का जीवन मात्र 30 वर्ष का है और सोच लो, आगे 30 वर्ष के लिए आपको कितना धन कमाना है। अपने वारिसों के लिए। क्योंकि इसके बाद का पल पल का जीवन आपको पानी से अपनी प्यास बुझाने के लिए रेगिस्तान में भटकते हुए मृग की तरह ही बिताने पड़ेगा।

शायद, एक एक बून्द पानी के लिये खून की नदिया बहानी पड़े। कहते है तीसरा विश्व युद्ध पानी के लिए होगा। सही बात है जिस तरह पानी का जल स्तर निरन्तर गिरता जा रहा है जमीन पाताल तक खोदने पर आने वाले 20 साल बाद पानी नहीं दे पाए। ऐसा भू वैज्ञानिको का निरन्तर किया जाने वाला शोध बता रहा है। बिना वर्षा के जमीन का जल स्तर बढ़ नहीं सकता और वर्षा के लिए प्रकृति का शुद्ध होना जरूरी है, मगर भौतिकवादी युग में ऐसा संभव नहीं है। क्योंकि इंसान को अब प्रकृति प्रेमी बनाना आसान नहीं है। हम दुनिया को उस तथाकथित विकास की तरफ ले गए, जहां पेड़ और जंगल की जगह कलकारखानों और कंकरीट के बने शहरों ने ले ली है। अब आपसे कहे आपको जीवन को पौराणिक पद्धति से जीना है, तो आप इसे कभी स्वीकार नहीं करेंगे। क्योंकि आप पाश्चात्य जीवनशैली के आदी हो चुके हो।

वैसे पृथ्वी अपना सन्तुलन स्वयं कर लेती है। इस भौगोलिक घटना से कई सभ्यता, नष्ट होकर फिर नई सभ्यता का विकास हुआ है। अगर दुनिया की लापरवाही से ये आधुनिक कहीं जाने वाली सभ्यता का अंत हो जाए तो इसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं है। चौथा विश्व युद्ध पाशानों और पत्थर के हथियारों से लड़ा जाएगा। ये सत्य ही आधुनिक संस्कृति के पतन की कहानी कह रहा है। जब तक सांस है, तब तक आस है। ऐसा लोग कहते अगर हम अभी सावधान हो, दुनिया की सभी सरकारे, संस्थाएं, समाज, व्यक्ति प्रकृति और पानी को बचाने की सकारात्मक पहल करें तो आने वाली पीढ़ियो को स्वस्थ पर्यावरण दे सकते हैं। चिन्तन सभी को करना है।

सूर्य प्रकाश दीक्षित
काव्य गोष्ठी मंच कांकरोली

नजरिया बदलने की जरूरत

नदियों का निरंतर गहरा उतरना बहुत ही चिंताजनक है। रेत के दोहन एवं तेज गति के पानी के बहाव के कारण मिट्टी बहकर चली जाती है और नदियों में गहरे खड्डे हो रहे हैं। इस कारण आसपास के कुओं का जल स्तर काफी गहरा चला जा रहा है। जगह जगह बोरवेल खोदने से भी भूजल स्तर प्रभावित हुआ है। हम यदि ठान लें, तो बहुत जल्द नदियां अविरल बहना प्रारंभ हो सकती है, जरूरत है तो एक साझा प्रयास की। नदियों के किनारे 1 किमी. तक बड़े पेड़ पौधे लगाया जाए, जिससे मिट्टी का कटाव रूकेगा। जड़ों से मजबूती मिलेगी, पेड़ों पर बैठने वाले कीड़े, मकोड़ों के कारण जलीय जंतुओं मछली इत्यादि को भोजन मिलेगा। मछलियां जल को शुद्ध रखती है। यदि नदियों के आस पास की भूमि खातेदारी है, तो उन्हें भी फलदार वृक्ष लगाने के लिए प्रेरित किया जा सकता है। वनस्पति अधिक होने से वर्षा भी अधिक होगी एवं धरती का तापमान भी नियंत्रित होगा। जगह जगह खोदे जा रहे बोरवेल पर रोक लगाई जाए। बहुत जरूरी होने पर ही इसकी मंजूरी दी जाए। पुराने कुओं एवं बावड़ियों को पुन: आबाद किया जाए। उन्हें जल संग्रहण के लिए उपयोग किया जा सकता है। निरंतर बह रही नदियों में खुलने दूषित पानी के नालों को बंद किया जाए। नदियों के किनारे स्थित पर्यटन स्थलों पर प्लास्टिक के उपयोग पर प्रतिबंध की पूर्ण पालना कराई जाए एवं प्लास्टिक के कचरे का उचित निस्तारण किया जाए। फैक्ट्रियों से निकलने वाले प्रदूषित कचरे को नदियों में बहाने पर सख्ती से रोका जाए। शहरों एवं गांवों में भी जल के अनावश्यक उपयोग पर रोक लगाई जाए पेयजल एवं सिंचाई हेतु जलाशयों से जल वितरण व्यवस्था समुचित हो जल का दुरुपयोग ना हो। जल के महत्व के लिए विभिन्न स्वयंसेवी संस्थाओं के जरिये जनता को जागरुक किया जाए। धार्मिक मान्यता के अनुसार पूजा या अनुष्ठान के नाम पर नदियों में बहाए जाने वाले पूजन सामग्री एवं केमिकल युक्त मूर्तियों को बहाने पर रोक लगाई जाए। पूजा पाठ व मूर्तियां के लिए अलग से कुंड बनाकर उसमें निस्तारित की जाए। धरती पर बहने वाली नदियां हमारे जीवन रेखा है। यदि नदियां नहीं रहेगी, तो हमारा जल प्रभावित होगा और जल से हमारा जीवन प्रभावित होगा। यदि हम इस समस्या को नजरअंदाज करते रहेंगे, तो वह दिन दूर नहीं जब पेट्रोल की कीमत पर हमें पानी की बोतल खरीदनी पड़ेगी।

तरूपुत्र-तरूमित्र कलश यात्रा निकाली

जयवर्द्धन न्यूज @ पत्रिका. स्वच्छ भारत समर इंटर्नशिप 2018 के अंतर्गत तरूपुत्र- तरूमित्र कलशयात्रा पिपलांत्री में निकाली गई।

सेठ रंगलाल कोठारी राजकीय महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई से स्वच्छ भारत समर इंटर्नशिप कर रहे निलेश पालीवाल ने बताया कि कलशयात्रा गांव के विभिन्न मार्गों से होकर दीनदयाल उपाध्याय सर्कल पहुंच कर मातृशक्ति द्वारा मानव श्रृंखला बना पर्यावरण संरक्षण का संकल्प लिया। राउप्रावि में पहुंच कर सभा में तब्दील हुई। पिपलांत्री पर्यावरण मानव विकास संस्थान के मांगीलाल पालीवाल ने कलशों की आरती उतारी। 101 महिलाएं सिर पर तरू कलश लिए चल रही थी। इस दौरान गायत्री परिवार के मोहनलाल व उनके सदस्यों ने कर्मकांड सम्पन्न कराया। इस दौरान संस्था अध्यक्ष दिनेश पालीवाल, ताराचंद पालीवाल, छगनलाल जोशी, लीलाधर, दिनेशचंद्र पालीवाल, गिरीराज, मोडीलाल, भोलीराम, दिलीप, मदनलाल, प्रभुलाल, प्रहलाद, नोजीराम, पवन सहित सैकड़ों महिला पुरुष थे।

मोहन भाई ने पढ़ाया संस्कार का पाठ

प्रसिद्ध राजसमन्द झील के तट पर स्थित एक पहाड़ी पर 30 दिसम्बर 1982 को अणुव्रत विश्व भारती की स्थापना करने वाले श्री मोहनलाल जैन 'मोहन भाई' का जन्म 24 सितम्बर 1919 को राजस्थान के बीकानेर क्षेत्र के सरदारशहर कस्बे में प्रतिष्ठित जैन परिवार में हुआ। वे पिता धनराजजी व माता धापीदेवी की पांचवी सन्तान थे। इनके दो बड़े भाई और दो बहने बड़ी थी। मोहन भाई का बचपन बड़ा उतार चढ़ाव वाला रहा, बचपन में ही पिताजी जैन साधु बन गए।

घर का वातावरण धार्मिक था। पाठशाला में पहले दिन गुरुजी को एक बच्चे को बेरहमी से पिटता देखा, तो गुरुजी के कठोर व्यवहार के चलते उनका पढ़ाई से मोहभंग हो गया। स्कूल जाने का वो पहला दिन स्कूल का आखिरी दिन था। घर पर ही स्वयं अध्ययन से शिक्षा अर्जित करने लगे। सम्भवत: स्कूल का यह पहला पाठ उनके जीवन का बोध पाठ बन गया और उन्होंने जीवनभर शिक्षा पद्धति के सुधार के अनेक सफल प्रयोग किए। उन्होंने सन् 1949 में सरदारशहर में मोन्टेसरी पद्धति आधारित बाल मंदिर की स्थापना की। यह सम्पूर्ण राजस्थान का पहला बाल मंदिर था। उनके इस प्रयास और मेहनत से अनेक कस्बों में बाल मंदिर प्रारंभ हुए।

सन् 1947 में जब आजाद भारत की योजनाएं बन रही थी, तब मोहन भाई ने समाज और परिवार के सन्तुलित विकास के लिए सरदारशहर में बालिका शिक्षा की पहल की। लड़कियों को स्कूल भेजना उस समय के रूढ़ीगत समाज के लिए एक दु:स्वप्न था। उनके इस कदम का गौर विरोध हुआ, लेकिन वे झुके नहीं और बालिका विद्यालय के महत्व को जन जन में स्थापित कर और शिक्षित युवकों को अनपढ़ युवतियों से शादी ना करने की शपथ दिला समूचे समाज की सोच बदलने का प्रयास किया।

सम्पूर्ण क्षेत्र में यह शिक्षा संस्थान मील का पत्थर साबित हुआ। आज ये विशाल महाविद्यालय का रूप ले चुका है। कमजोर वर्ग के बच्चों के लिए रोजगार परक शिक्षा के लिए बहुउद्देशीय संस्थान बापा सेवा सदन की स्थापना 1950 में की।

शिक्षा के क्षेत्र में मोहन भाई के प्रयोग निरन्तर चलते रहे। वे चाहते थे कि बच्चों को उनके मन के अनुकूल मनोविज्ञान आधारित शिक्षा मिलती रहे। आपने गीजूभाई की शिक्षा पद्धति पर आधारित 'बालवाड़ी' की स्थापना 1953 में की, जहां पुस्तकालय, वाचनालय और खेलकूद के साधनों के साथ छोटा जन्तुआलय और अजायब घर भी बनाए गए।

संस्कार निर्माण व कुरीति उन्मूलन के अभियान को व्यापक स्तर पर फैलाने के उद्देश्य से 1973 में 'भारतीय संस्कार निर्माण समिति' की स्थापना की और बच्चों की सांस्कृतिक मंडली तैयार कर देश के कोने कोने में पद यात्राएं की। उनके साथ प्रदर्शनी, फिल्म, नुक्कड़ नाटक आदि की प्रशिक्षित कार्यकर्ताओं की टीम रहती थी।

सैंकड़ों गांवों, कस्बों और नगरों में कार्यक्रम किए। हजारों लोगों ने नशा मुक्ति का संकल्प लिया, कुरीतियों का त्याग किया और परिवार में नैतिक आचरण पर चलने का प्रण लिया।

वे आचार्य तुलसी द्वारा प्रवर्तित अणुव्रत आन्दोलन से निकट से जुड़े और इस आन्दोलन को रचनात्मक दिशा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

स्वतंत्रता आन्दोलन में भी सक्रिय भूमिका निभाते हुए मोहन भाई गांधीजी के विचारों से भीतर तक रम गए थे। छुआछूत की बुराई को मिटा संस्कार निर्माण हेतु समिति बनाई। शराबबन्दी के प्रयास किए, नारी जागरण और स्वावलम्बन के प्रयास में जुटे रहे।

मोहन भाई एक सृजनशील कवि भी थे, उनकी कविताएं समाज की जड़ता पर प्रहार करती है, तो दूसरी तरफ प्रतिकूलताओं में भी आगे बढ़ते रहने की प्रेरणा देती हैं। आचार्य तुलसी उनकी एक कविता अक्सर सुनाया करते थे, लकीर के फकीर। इनका काव्य संग्रह फूल खिले कांटो में प्रकाशित हो चुका है। इनकी कविताएं दिल को भेदने वाली और साथ ही सामाजिक ढकोसलो पर तीखा प्रहार भी करती है।

मोहन भाई ने जीवनभर जिन सिद्धांतों की पैरवी की। उन्हें स्वयं भी जीया और अपने परिवार में भी वहीं संस्कार स्थापित किए। अपने आठ बेटे बेटियों के विवाह बिना दहेज के पूर्ण सादगी से कर समाज में कथनी करनी की समानता की दुर्लभ मिसाल पेश की।

मोहन भाई सम्मान लेने में विश्वास नहीं रखते थे। उसके बावजूद उन्हें केन्द्र सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने राजीव गांधी मानव सेवा पुरस्कार से सम्मानित किया। 2004 में महामहिम उपराष्ट्रपति ने गांधी सेवा पुरस्कार से सम्मानित किया और अन्य संस्थाओं ने अणुव्रत पुरस्कार, महावीर महात्मा पुरस्कार, समाज सेवा पुरस्कार, लिजेंड इन ऐजुकेशन सम्मान से देश और दुनिया में नवाज़ा गया।

मोहन भाई की पत्नी का नाम भागीरथी था। जैसा नाम वैसा काम। मोहन भाई के साथ कन्धे से कन्धा मिला पूरा साथ दिया। राजसमन्द के दिवेर कस्बे में आचार्य तुलसी ने उद्बोधन में कहा, इतनी देर आपने करोड़पतियों की प्रशंसा सुनी। अब में आपको एक अकिंचन करोड़पति से परिचय कराता हूं। कहां है मोहन जी, कहां है भागीरथी जी ?

पांडाल में उपस्थित हजारों लोगों की आंखें इन अजनबी नामों को जानने के प्रयास में चारों तरफ घूमने लगी। एक दम पीछे की पंक्ति से मोहनभाई और भागीरथीजी उठे और मंच के सम्मुख पहुंच गुरुदेव के चरणों में नतमस्तक हो गए।

आचार्य तुलसी ने स्वयं अपने श्री मुख से बताया कि मोहन भाई राजसमन्द में क्या परियोजना प्रारम्भ करने जा रहे हैं। मेवाड़ की जनता का मोहन भाई व भागीरथी जी से यह पहला परिचय था। स्वयं गुरुदेव द्वारा अनूठा, अकल्पनीय परिचय, अमूल्य आशीर्वाद की अमिट धरोहर प्राप्त कर मोहन भाई, भागीरथीजी राजसमन्द लौटे और प्रारम्भ हो गया, महायज्ञ। कालान्तर में इस संस्था को अणुविभा के नाम से लोकप्रियता मिली। लगभग 15 वर्ष मोहन भाई के साथ भागीरथीजी ने इस पहाड़ी पर रहकर अणुविभा 'बाल शान्ति निलयम्' को मूर्त रूप दिया।

22 जून 1997 को भागीरथी जी की मृत्यु से मोहन भाई पर दु:खों का पहाड़ टूट पड़ा और मोहन भाई पूरी तरह बिखर गए, मगर अपने आपको फिर संभाला।

बच्चों में राष्ट्रीय भावना का विकास, उनमें संस्कारों की नींव मजबूत करने के लिए 'बच्चों का देश' मासिक पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ किया। इसका विमोचन 17 अगस्त 1999 को जयपुर में राजस्थान के राज्यपाल अंशुमानसिंह द्वारा किया गया। ये पत्रिका आज भी विद्यालयों में हर माह बच्चों को पढ़ने के लिए भेजी जाती है और देश विदेश में आज इसके असंख्य बच्चे और परिवार के सदस्य पाठक है।

कर्मशील व्यक्ति इस दुनिया में एक उद्देश्य लेकर आता है, मगर जब विदा होता है, तो यादगार बन जाता है। श्री मोहन लालजी जैन के व्यक्तित्व और कृतित्व की अनाम कर्मयोगी की सृजन यात्रा में जीवन का दर्शन, ज़िन्दगी का नायाब फलसफ़ा पढ़कर मैं भी गदगद हो गया।

जीवन जीने की प्रेरणा देने वाला समाजसेवक और स्वतंत्रता सेनानी और संघर्ष और संस्कार का ये पुजारी 24 अप्रैल 2014 को दुनिया को अलविदा कह गया। स्वाभाविक मृत्यु जयपुर में हुई और आपका दाहसंस्कार भी वहीं किया गया, जहां हजारों लोगों ने इस महान आत्मा को नम आंखों से अन्तिम विदाई दी।

देश की इस विभूति को कोटि कोटि वन्दन जिसका मेवाड़ की धरती से जुड़ाव बना रहा।

प्रस्तुति :
सूर्य प्रकाश दीक्षित
कवि, साहित्यकार
काव्य गोष्ठी मंच, कांकरोली

तीखी मिर्ची

भगवान बचाये फोकटियो से

विजय शर्मा @ राजसमंद
liverajsamand.com (94142 39648)

सब्जी की दुकान पर अक्सर फोकट में धनिया और मिर्च लेने में लोगों को बड़ा आनंद मिलता है। महिलाएं भी साड़ी की दुकान पर एक्स्ट्रा प्लास्टिक की थैली लेने के लिए भी लाचार दृष्टि से देखती रहती है। यही रवैया पानी पुरी की लॉरी पर होता है, जहां एक्स्ट्रा पानी पीकर भी मुफ्त में एक पानी पुड़ी खाने में लोगों को बड़े आनन्द की अनुभूति होती है। बिना मूल्य चुकाए किसी वस्तु का उपभोग करने वाली इस मानवीय प्रजाति को सभी फोकटिया के नाम से जानते हैं। इस प्रजाति के लोग अक्सर किसी न किसी की तरफ लाचार दृष्टि से देखते हैं और कुछ लोग तो मांगने में भी शर्म नहीं करते हैं। सामने वाला उसे बिचारा समझ कर दया के रूप में चाय, गुटखा, चश्मा या अन्य सामग्री दे देता है।

कुछ फोकटिये आपसे दो मिनट के लिए गाड़ी मांगकर ले जाते हैं, मगर दो घंटे बाद वापस आते हैं। इनको कोई दो बात सुना भी दे, तो इन्हें कभी बुरा नहीं लगता है। क्योंकि इनकी आदत जो हो जाती है। इस प्रजाति के कुछ लोग अक्सर सूट बूट में तैयार होकर चौराहे पर मिल जाते हैं। इन लोगों का कोई खास काम धंधा नहीं होता है, पर चमचागिरी में इनकी बड़ी मास्टरी होती है। ऐसा शख्स किसी भी बड़े अफसर, सेठ या किसी बड़े राजनेता को देखकर उनके पीछे फेविकोल की तरह चिपकने को दौड़ता है और उनके साथ चमचागिरी कर मुफ्त की चाय, गुटखा खाकर आसपास के लोगों को यह

बताने का भी प्रयास करता हैं कि उनके साथ अपना तगड़ा याराना है। इसी प्रजाति के कुछ लोग जो किसी दफ्तर पर रिश्वत लेने के लिए जाने जाते हैं। इन लोगों का फोकट में किसी से भी कुछ भी काम करवाने का बड़ा तजुर्बा होता है।

इनके घर का राशन भी फ्री में ही पहुंचता है। पुलिस महकमें में इसी प्रजाति के लोगों को मुफ्त टेम्पो में बैठने में भी बड़ा आनंद मिलता है। यही पुलिसवाले फोकट में सब्जी की लॉरी वालों से आम खाते हैं, तो शाम को अपने घर की सब्जी भी ले जाते हैं। इन्हीं फोकटियों में से कुछ प्रमोट होकर मोहल्ले के नेता भी बन जाता है, मगर उनका स्वभाव वही मुफ्तखोरी का ही बना रहता है। ऐसे लोग जियो के जमाने में भी मिस्कॉल करके सामने वाले की कॉल का इन्तजार करते हैं।

अभी एक दिन मैंने तो गलती से एक गली के नेता को हमारी जयवर्द्धन मैगज़ीन की वार्षिक सदस्यता लेने का आग्रह कर दिया, तो वह नेता बोला अरे! हम राजनेताओं को तो आप मुफ्त में भेजा करो। हमारे से क्या सदस्यता राशि की आशा करते हो। मैंने कहा वास्तव में आपकी बात बिल्कुल सही है, राजनेता तो वही सफल है, जिसे मुफ्त का खाने की आदत हो जाए, वरना राजनीति करने का क्या फायदा। बाद में वह बोला मगर मैं तो इतना बड़ा नेता नहीं हूं, तो मैंने कहा क्यों चिंता करते हो, आप में बड़ा नेता बनने की संभावनाएं तो कूट कूट कर भरी है।

अब भगवान ही बचाए हमें इन फोकटियो से।

दसवीं बोर्ड में बेटियों ने मारी बाजी

राजसमंद जिले का परिणाम रहा 77.46 फीसदी

राजसमंद @ जयवर्द्धन न्यूज. *माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की ओर से घोषित दसवीं बोर्ड परीक्षा के परिणाम में राजसमंद जिले का परिणाम 77.46 फीसदी रहा, जो गत वर्ष के 72.61 के मुकाबले 4.85 प्रतिशत की बढ़त मिली है। जानकारी के अनुसार राजसमंद जिले में 17 हजार 789 विद्यार्थियों ने परीक्षा दी, जिसमें से 11 हजार 455 उत्तीर्ण हुए। सफल विद्यार्थियों में 6 हजार 75 छात्र व 5 हजार 380 छात्राएं हैं, जबकि 3 हजार 334 छात्र फेल और सप्लीमेंट्री रहे। छात्राओं का परीक्षा परिणाम 78.75 एवं छात्रों का 76.35 रहा। राजसमंद जिला प्रदेश में 19वें स्थान पर रहा।*

गुरूकुल स्कूल का डंका, निकाला विजयी जुलूस

जयवर्द्धन न्यूज @ राजसमंद
liverajsamand.com

भीम. गुरुकुल विद्या मंदिर उच्च माध्यमिक विद्यालय भीम का गत 3 वर्षों से शत प्रतिशत परीक्षा परिणाम हासिल करने के उपलक्ष में विद्यार्थियों का विजय जुलूस निकाला गया। कार्यक्रम भाट समाज महासभा कलवारा क्षेत्र अध्यक्ष राधेश्याम रुपावत, सचिव हीरालाल भाट, महामंत्री मुकेश कुमार भाट, शारीरिक शिक्षक गोविंद प्रसाद, डायरेक्टर सुरेशभाई भाट, प्रधानाचार्य रोशनलाल बुनकर आदि के सानिध्य में स्वागत जुलूस डीजे की धुन पर देशभक्ति गानों के साथ रवाना हुआ, जो कस्बे के देवनारायण कॉलोनी, रोडवेज बस स्टैंड, बलाइयों का कुआं, सदर बाजार, तहसील रोड, अस्पताल मार्ग, डाक बंगला होते हुए इंदिरा कॉलोनी पहुंचा, जहां पर विद्यालय परिसर में अतिथियों द्वारा प्रतिभाशाली विद्यार्थियों का तिलक, माल्यार्पण कर स्वागत अभिनंदन का कार्यक्रम आयोजित हुआ।

स्कूल डायरेक्टर सुरेश भाई ने बताया कि बाहरवीं विज्ञान वर्ग में कुल 32 विद्यार्थियों में से 24 प्रथम श्रेणी, 8 द्वितीय श्रेणी उत्तीर्ण हुए। प्रवीण सिंह ने 82.40 फीसदी अंक अर्जित कर प्रथम स्थान प्राप्त किया, वहीं दसवीं कक्षा में कुल 48 विद्यार्थियों में से 15 प्रथम श्रेणी, 28 द्वितीय श्रेणी एवं 5 विद्यार्थी तृतीय रहे। हेमेंद्र सिंह ने 90.33 फीसदी अंक हासिल कर प्रथम स्थान प्राप्त किया। बताया कि बाहरवीं विज्ञान वर्ग एवं दसवीं बोर्ड परीक्षा में 7 फीसदी परिणाम देखकर क्षेत्र के विद्यार्थियों ने इतिहास रचा है। इस अवसर पर उर्मिला कंवर, बसंता कंवर, लाजवंती देवी, भगवतीलाल, प्रकाशलाल, सिमरन भट्ट, हितेशसिंह, सोनू कुमारी, लोकेश सिंह, राजवीर सिंह, सुमन कुमारी, ज्योति कुमारी, मोहनसिंह, अरुणा कुमारी, अनिल कुमार, खुशबू कुमारी, हेमेंद्रसिंह, रौनक रावत, हरदयाल सिंह, देवेंद्र सिंह आदि मौजूद थे।

गायत्री स्कूल : बारहवीं में 94.73% और 10वीं में 91.81%

राजसमंद. जिला मुख्यालय के सभी स्कूलों के बोर्ड परिणाम में गायत्री पब्लिक सीनियर सैकण्डरी स्कूल धोइन्दा बेहतर रहा है। 12वीं विज्ञान 94.73 फीसदी, वाणिज्य 100 फीसदी, व कला वर्ग का 100 फीसदी परिणाम उपलब्ध करने के साथ ही दसवीं बोर्ड का 96.10 फीसदी परीक्षा परिणाम देकर गायत्री पब्लिक स्कूल ने अपना स्पष्ट शैक्षणिक रूझान प्रदर्शित किया है। कक्षा 10वीं के 91.83 फीसदी के साथ विशाल लौहार प्रथम, दीपिका पालीवाल 90 फीसदी के साथ द्वितीय व 88.8 फीसदी लेकर दीपक झाखड़ तृतीय स्थान पर रहे हैं।

राजसमंद में धोइंदा स्थित गायत्री स्कूल के वे छात्र छात्राएं, जो दसवीं-बारहवीं में अव्वल रहे।

12वीं विज्ञान में उच्चतम 86.20 फीसदी अर्जित कर शिवानी पालीवाल प्रथम, 85.80 फीसदी लेकर प्रेरणा पालीवाल द्वितीय व 83.3 फीसदी से भूपेश पालीवाल विद्यालय स्तर पर तृतीय रहे हैं। वाणिज्य संकाय में विद्यालय में रीना वैष्णव 82 फीसदी से प्रथम, 79 फीसदी से रिया शर्मा तथा सत्यनारायण कुमावत द्वितीय एवं कृष्णा पालीवाल 77 फीसदी से तृतीय स्थान रही। कला वर्ग में 89 फीसदी ट्विंकल शर्मा प्रथम 87 फीसदी, महिमा पालीवाल द्वितीय एवं विनय झाखड़ 81.4 फीसदी तृतीय रहे।

इस अवसर पर संस्था सचिव कृष्ण श्रीमाली, अध्यक्ष हरिवल्लभ पालीवाल, कोषाध्यक्ष गोपाल श्रीमाली ने सभी छात्रों अध्यापकों एवं विद्यार्थियों को बधाई दी। विद्यालय में आयोजित कार्यक्रम में डॉ. गिरीश पालीवाल ने छात्रों का सम्मान करते हुए उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं दी।

दसवीं में श्रीजी स्कूल के 16 और सीबीए के 10 छात्रों ने हासिल किए 90 प्रतिशत से ज्यादा अंक

जयवर्द्धन न्यूज @ राजसमंद

liverajsamand.com

नाथद्वारा. श्रीजी पब्लिक सीनियर सैकंडरी स्कूल का माध्यमिक शिक्षा बोर्ड का परीक्षा परिणाम के तहत प्रविष्ट 152 बच्चों में से 139 बच्चे प्रथम और 13 द्वितीय रहे। हनी अग्रवाल ने 95 प्रतिशत अंक प्राप्त किए। 152 बच्चों में से 16 ने 90 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त किए। इनमें गणित विषय में 16 बच्चों ने 100 में से 100 अंक प्राप्त किए। अंग्रेजी में 20, विज्ञान में 11, सामाजिक विज्ञान में 12 और गणित में 33 बच्चों ने 95 प्रतिशत से ज्यादा अंक प्राप्त किए। 25 बच्चों ने 85 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त किए। स्कूल निदेशक हेमंत शर्मा ने इस उपलब्धि का श्रेय स्कूल परिवार के सदस्यों की मेहनत को दिया। सह निदेशिका डॉ. लविना शर्मा और प्रधानाचार्य हरिदास पारीख ने उत्कृष्ट परीक्षा परिणाम के लिए स्कूल के शिक्षक शिक्षिकाओं और अभिभावकों को बधाई दी।

सभी छात्र 70 फीसदी से ज्यादा अंक से उत्तीर्ण

राजसमंद. द क्रिएटिव ब्रेन एकेडमी नाथद्वारा में दसवीं परीक्षा परिणाम में सभी छात्र उत्तीर्ण हुए और सभी ने 70 फीसदी से ज्यादा अंक अर्जित किए। क्लास के 68 में से 22 छात्रों ने गणित में रिकॉर्ड 100 में से 100 अंक अर्जित किए। इसके तहत गणित में कुल 68 में से 48 छात्र छात्राओं ने 90 फीसदी से अधिक अंक अर्जित किए। इसी तरह विज्ञान विषय में 27 छात्रों, अंग्रेजी में 24 विद्यार्थियों, संस्कृत में 33 विद्यार्थियों ने 90 फीसदी से ज्यादा अंक अर्जित कर अलग रिकॉर्ड बनाया। प्राधानाचार्या श्रीमती शीतल गुर्जर ने उत्कृष्ट परीक्षा परिणाम पर शिक्षकों के साथ अभिभावकों को भी बधाई दी।

6 विद्यार्थियों का जेईई मेंस में चयन

दी क्रिएटिव ब्रेन एकेडमी सीनियर सैकंडरी स्कूल के 6 विद्यार्थियों का जेईई मेंस में चयन हुआ है। निदेशक शिवहरि शर्मा ने बताया कि विद्यालय के पारितोष सनाढ्य, प्रियल माहेश्वरी, अर्पित बिरला, हर्षित गुप्ता, राहुल सोनी व अभिषेक प्रजापत का जेईई मेंस परीक्षा में चयन हुआ है।

कावड़यात्रा में महिलाएं भी होंगी शामिल

राजसमंद. कावड़यात्रा आयोजन समिति की बैठक अध्यक्ष हेमंत गुर्जर की अध्यक्षता में चौमुखा महादेव मंदिर परिसर में हुई। बैठक संरक्षक व पूर्व पालिकाध्यक्ष दिनेश पालीवाल, बालुदास वैष्णव, महंत मंगलमुखी महाराज के आतिथ्य में हुई। बैठक में सर्वसम्मती से निर्णय लिया कि सावन माह में कांकरोली गुप्तेश्वर महादेव से परशुराम महादेव तक कावड़यात्रा 5 अगस्त को निकाली जाएगी। इस कावड़ में पैदल यात्री व महिलाओं को भी शामिल करने का निर्णय लिया गया। सभी पैदल यात्रियों व कावडियों का रजिस्ट्रेशन कराना अनिवार्य होगा। इस बैठक में अलग अलग कमेटियों का गठन कर व्यवस्थाओं का जिम्मा सौंपा गया। बैठक में युधिष्ठिर बोहरा, भैरूलाल कुमावत, मनोज पालीवाल, नाथूलाल गुर्जर, जयंत पालीवाल, किशन सिंह, जगदीश कुमावत, जिग्नेश कुमावत, रतन लक्षकार, पन्नालाल कुमावत, लक्ष्मी लाल टांक, उमेशचंद्र प्रजापत, चंद्रशेखर पाराशर, लालसिंह राठौड़, अभयसिंह चुंड़ावत, मोहन गुर्जर, जगदीश कुमावत, मनीष पालीवाल, तुलसीराम कुमावत, संदेश पगारिया, मांगीदास वैष्णव, मुरलीधर गर्ग, महावीर रेगर, अशोक पालीवाल, जगदीशचंद्र कीर, कन्हैयालाल पालीवाल, महेश पूर्बिया, राजेश पालीवाल, शंकरलाल जोशी, अर्पित जैन आदि सदस्य मौजूद थे।

सीबीए स्कूल में गीता का अध्यापन

जयवर्द्धन न्यूज @ राजसमंद
liverajsamand.com

राजसमंद. क्रिएटिव ब्रेन एकेडमी स्कूल नाथद्वारा उदयपुर संभाग का पहला स्कूल है, जहां गीता का अध्यापन कराया जाता है।

निदेशक शिवहरि शर्मा ने समस्त छात्र छात्राओं को गीता के बारे मे आधारभूत जानकारी देते हुए बताया कि गीता केवल धर्मग्रंथ ना होकर सम्पूर्ण जीवन ग्रंथ है। गीता एवं विज्ञान एक ही सिक्के के दो पहलू है। यदि गीता को गूढ़ रूप से समझने का प्रयास किया जाए, तो हम पाएंगे कि इसके श्लोको में राजनीति शास्त्र, दर्शन शास्त्र, न्याय शास्त्र, कानून, मनोविज्ञान, समाज शास्त्र व नैतिक शास्त्र की विभिन्न विषयों के आधारभूत सिद्धांत शामिल है।

एक श्लोक का उदाहरण देते हुए उन्होंने बताया कि आत्मा ना पैदा होती है, ना नष्ट होती है। वह केवल एक रूप से दूसरा रूप धारण करती है। उसी प्रकार विज्ञान में ऊर्जा संरक्षण के नियमानुसार ऊर्जा ना तो उत्पन्न की जा सकती है। न ही नष्ट की जा सकती है, यह केवल एक रूप से दूसरे रूप में परिवर्तित होती है। गीता के अनुसार ईश्वर और पदार्थ एक दूसरे में परिवर्तित होते रहते है। इसी बात को आइंस्टीन का ऊर्जा द्रव्यमान का सिद्धांत भी बताता है।

संभाग में पहली बार किसी इंग्लिश मीडियम स्कूल द्वारा इस तरह की अनूठी पहल किए जाने पर न केवल छात्र छात्राओं ने खुशी व्यक्त की अपितु अभिभावकों ने भी इसकी प्रशंसा की।

राष्ट्रीय स्तर की निबंध स्पर्द्धा में मोनिका प्रथम

राजसमंद. सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय की ओर से आयोजित सड़क सुरक्षा, जीवन रक्षा विषयक निबंध प्रतियोगिता में महाराणा कुंभा उच्च माध्यमिक विद्यालय की छात्रा मोनिका प्रजापत ने राष्ट्रीय स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त किया। संस्था प्रधान मोहनलाल बलाई ने बताया कि इस पुरस्कार के तहत उसे सड़क एवं परिवहन मंत्री नितिन गडकरी द्वारा नई दिल्ली में 20 हजार रुपए का चेक एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया।

प्रेरणा

पेड़ का महत्त्व

माधो अपने खेत में हल जोत रहा था। खेत के बीचों बीच एक नीम का घना वृक्ष आसमान में शाखा फैलाएं खड़ा था। हल जोतते समय वृक्ष खेत के बीचों बीच में होने के कारण परेशानी होती थी। बार बार वृक्ष के दायीं बायीं ओर से आना जाना पड़ता था।

वृक्ष के नीचे बैठा माधो का 10 वर्षीय लड़का सोमा देख रहा था, अपने पिता को।

एक हाथ में अंगोछा, एक हाथ बैल की पीठ पर, कभी माधो बैल पीठ को थपथपाता और कभी उसकी पूंछ मरोड़कर उसको आगे धकेलता। हाथ के अंगोछे से पसीना पोंछता जाता।

तभी माधो की पत्नी खाना लाई। पिता व पुत्र को वृक्ष की घनी छाया के नीचे बिठाया। खाने की पोटली खोली दो रोटी पुत्र को व चार रोटी पति को रखी। उस पर प्याज मिश्रित धनिये की चटनी रख दी।

भोजन करने के पश्चात पानी पीकर माधो उसी वृक्ष की घनी छाया तले अंगोछे का सिराना बना कर तने के सहारे आंखे मूंद विश्राम कर रहा था। सोमा से रहा नहीं गया और उसने पिता से पूछा– बाबा यह नीम का पेड़ बीच में होने से बार बार आपको हल जोतने में परेशानी हो रही हैं, इसे कटवा क्यों नहीं देते हो ?

बाबा ने मुस्कुराते हुए पूछा – तुम गर्मी से बचने के लिए कहां बैठे हो ?

सोमा ने कहा – पेड़ के नीचे।

बाबा – हमने खाना कहां बैठकर खाया ?

सोमा ने कहा – पेड़ के नीचे।

बाबा फिर बोले – हम कहां विश्राम कर रहे हैं ?

सोमा ने फिर कहा – पेड़ के नीचे।

तब बाबा ने कहा – यदि पेड़ नहीं होता तो हम सब यहां पेड़ की घनी छाया में न खाना खा पाते और न ही विश्राम कर पाते। पेड़– पौधे तो हमें जीवन देते हैं, प्राण वायु देते हैं। इनसे ही हमारा जीवन है। यह है तो हम हैं। हल जोतने में थोड़ी सी परेशानी होने से इसे काट दें और अनेक सुविधाओं से वंचित हो जाए, यह ठीक नहीं।

यह बात सुनकर सोमा पेड़ का महत्त्व समझ गया और पिता की गोद में सिर रखकर उसी पेड़ को निहारने लगा।

मनीष नन्दवाना
पिता ईश्वर नन्दवाना
नन्दवाना, राजनगर
जिला राजसमंद
मो. 94603-70192

हां मैं हिन्दू आतंकवादी हूं,

हां मैं हिन्दू आतंकवादी हूं, संस्कृति का सम्मान करता,
माता- पिता के पांव छुता, बहन- बेटियों की रक्षा करता,
बहनों से राखी बंधवाता... हां सच कहा मैं हिन्दू आतंकवादी हूं। (1)

हिन्दुओं से राम- राम बोलता, मुस्लिम से सलाम- ए- वलिकुम,
जैन से बोलता जय जिनेन्द्र, सिक्ख से बोलता सत्सृकाल,
केसरिया पहन विश्व शांति का संदेश देता मैं हिन्दू आतंकवादी हूँ (2)

मंदिर जाता, भजन सुनता, संतो के आशीष से खुशियां भरता।
सामाजिक एकता को बढ़ावा देता, भाईचारे में प्रेम भरता।
गुरूओं का आशीष लेकर संसार में ज्ञान का प्रसार करता।
सच कहते साहब मैं हिन्दू आतंकवादी ही हूं। (3)

पक्षियों को दाना चुगाता, गौमाता की रक्षा करता, सत्य की विजय,
विश्व के कल्याण की कामना करता, हां मैं हिन्दू आतंकवादी हूं (4)

बाढ़ पीड़ितो की मदद करता,
फिर भी इनमें जातिवाद का भाव नहीं रखता।
वसुधैव कुटुम्बकम का नारा देता, तिलक लगाता ब्राम्हण हूं। (5)

हिन्दू- मुस्लिम, सिक्ख- इसाई, हम सब है भाई-भाई का नारा देता।
इन सब कर्मो से देशभक्त कहलाता हूं, फिर भी हिन्दू आतंकवादी हूं।
हां साहब सच कहते हो मैं हिन्दू आतंकवादी हूं। (6)

विजय पालीवाल,
मुंडोल राजसमंद, मो. 8769672358

धरती माँ की पुकार

धरती मां की आँख में आँसू,
क्यों जहर मुझमें घोल रहे हो,
तुम थोड़े से लोभ-लालच में,
विषेले धुंए और रसायनों से,
जब कूड़े-कचरे वाला पानी,
मेरा दर्द तुम क्या जानोगे,
पेड़- पौधे कटते जा रहे,
दिनोंदिन जल रही हूं मैं,
जल, ध्वनि, वायु प्रदूषण,
सब पर रोकथाम करलो वरना,
जसवंत करें करबद्ध विनती,
भावी पीढ़ी के भविष्य के लिए

वो चीख-चीख, कर कहती है।
मुझमें सारी दुनिया रहती है।।
कल-कारखाने चलाते हो।
क्यों तुम मुझको जलाते हो।।
मेरी रगो में बहता है।
मेरा दम घुटता रहता है।।
विकास की बलिवेदी पर।
ग्लोबल वार्मिंग का है असर।।
इनसे मेरा अस्तित्व संकट में।
समा जाउंगी मैं मिनट में।।
धरती मां को बचाना होगा।
पर्यावरण हमें बचाना होगा।।

जसवंतलाल खटीक
रतना का गुड़ा देवगढ़, काव्य गोष्ठी मंच कांकरोली

जीवतो रेवै

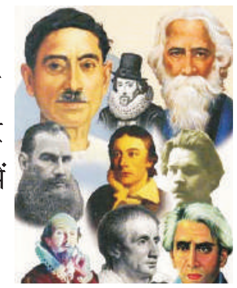

जो
भणतो रेवै
लिखतो रेवै
गोष्ठियां अर
सम्मेलना में
बोलतो अर
गातो रेवै।
पत्र पत्रिका अर
स्मारिका में
छपतो रेवै।
किताबां निकालतो रेवै
अलंकरण अर सम्मान
पावतो रेवै
घर, परवार, समाज अर
देश रो नाम
ऊंचो करवाने

नवी नवी फसलां
उगावतो अर सींचतो रेवै

मां सुरसती रो भण्डार
भरतो रेवै
वो साहितकार
मरवा केड़े बी
जीवतो रेवै अर
देश अर दुनियां में
उजालो करतो रेवै

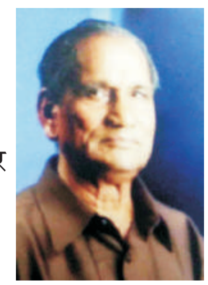

चतुर कोठी
कोठारी सदन
बड़ा पाड़ा, राजनगर
राजसमंद
मो. 94608-55853

बचपन की बारिश

बहुत भिगोती थी
वो बचपन की बारिश

वो स्कूल से आना
बारिश में दौड़ लगाना
छप छप की आवाजें
साथी को भिगो जाना
वो हंसी की फुंहारें
भीगे तन मन सब हारे
बहुत भिगोती थी
वो बचपन की बारिश।

टिप टिप बारिश का आना
मम्मा छत पर है जाना
डांट मम्मा की खाना
सैकड़ों बहाने बनाना
छत पे उछल कूद
देर तक नहाना खूब
बहुत भिगोती थी
वो बचपन की बारिश

सरपट चलती
कागज की नावें
लहर लहर चलती
वो मस्ती भरी नावे
दौड बहुत मचती
नाव का आगे जाना
सखी को बहुत जलाना
बहुत भिगोती थी
वो बचपन की बारिश

किसी भी बहाने
बाहर को जाना
छतरी का न खुलना
बस भीगते जाना
दिल का बच्चा
उछल कूद मचाता
न सुनता किसी की
बस अपनी मनवाता

बहुत भिगोती थी
वो बचपन की बारिश

कमलेश जोशी
कांकरोली राजसमंद

खास अपनापन है जयवर्द्धन में

आज जयवर्द्धन पत्रिका मेरे हाथ में थी। जब इस पत्रिका के बारे में सुना देखा, तो इसे पाने की इच्छा हो गई। यह पत्रिका अपने आप में बहुत कुछ सहेजे हुए थी। उसमें विभिन्न पहलुओं पर जानकारी उपलब्ध थी। आस पास के समाचार, साहित्य, चुटकुले, निबंध वगैरह। इन सबसे बढ़कर भी जयवर्द्धन में जो खास बात थी, वो थी अपनापन। यह अपने शहर की अपने ही लेखकों, साहित्यकारों के सहयोग से बनी हुई पत्रिका थी।

आज बाजार में अनेकों पत्र पत्रिकाएं उपलब्ध हैं। उनमें भी बहुत अच्छी पाठ्य सामग्री पढ़ने को मिलती है, पर वो लेखक या तो किसी ओर शहर के होते हैं या हम उनसे अपरिचित होते हैं। उन पत्रिकाओं में उपलब्ध सामग्री का भी हमारे शहर से कोई संबंध नहीं होता। जयवर्द्धन में अपनापन है। यह अपने शहर की बात करती है। अपने आसपास के क्षेत्रों, जिससे हम जुड़े हुए हैं, उनकी बात करती है। एक तरह से ये अपनी माटी की बात करती है। जयवर्द्धन ने स्थानीय लेखकों के लिए एक नया मंच प्रदान किया है। यह सभी को अभिव्यक्ति का सुंदर मंच प्रदान करती है। जयवर्द्धन ने बहुत कम समय में अपनी पहचान बनाई है। इसे स्कूल व कॉलेज के पुस्तकालयों में भी रखा जाना चाहिए, ताकि वहां अध्ययनरत इच्छुक विद्यार्थियों को इसका लाभ मिल सके और वे भी अपनी अभिव्यक्ति जयवर्द्धन के माध्यम से दे सकें।

कमलेश जोशी

शिक्षक, मालनिया चौक, कांकरोली

जताई वैदिक ज्ञान की जोत

जयवर्द्धन पत्रिका ने सनातन धर्म के तहत वैदिक ज्ञान का महत्त्व समझाया है। वास्तव में सारगर्भित और आमजन के लिए प्रेरक थी। इस बीच में हमारी शिक्षा पद्धति को लेकर लॉर्ड मैकाले द्वारा ब्रिटिश सरकार को लिखा खत भी जनता के साथ सरकार की आंखें खोलने वाला प्रेरक लेख रहा।

भगवतसिंह चुंडावत, बागुन्दड़ा, राजसमंद

सनातन संस्कृति का परिचय कराया

जयवर्द्धन पत्रिका में वैदिक संस्कृति के प्रचार प्रसार का पूरा कवरेज दिया। नई पीढ़ी को अपनी सनातन संस्कृति से परिचित कराया है, जो बहुत ही आवश्यक है। सनातन वैदिक शिक्षण संस्थान इस दिशा में बेहतरीन कार्य कर रहा है।

राजेश दवे, सदस्य, बाल कल्याण समिति राजसमंद

निज पर शासन, फिर अनुशासन

शाम सात साढ़े सात का वक्त रहा होगा। सामने मल्होत्रा जी के घर की ऊपरी मंजिल से फेंकी हुई एक प्लास्टिक की थैली सड़क पर आ गिरी और उस थैली में भरा सारा कचरा सड़क पर फैल गया। हालांकि नगरपरिषद द्वारा रखवाया गया कचरा पात्र उनके घर से कुछ कदम की दूरी पर ही था, पर मल्होत्रा जी के किराएदार ने वहां तक जाने की जहमत उठाना मुनासिब नहीं समझा। अगले दिन सुबह सुबह मल्होत्रा जी घर के बाहर मंजन थूंकते हुए उस कचरे को पड़ा हुआ देख कर नगरपरिषद को गालिया निकालने लगे। ये वो घटना है, जो हम सबके आसपास रोज होती है। हम अपनी गलतियों की जिम्मेदारी दूसरों पर डालते हैं, बिना सोचे, बिना समझे।

शायद हम अब इस हद तक नकरात्मकता से भर चुके है कि हमें हमारे आसपास हो रहे अच्छे काम भी नज़र नहीं आते। याद कीजिए हमने कब आखरी बार किसी अनजान सफाईकर्मी को हमारा कचरा उठाने के लिए धन्यवाद कहा था। निश्चित ही उसे कचरा उठाने के लिए सरकार वेतन देती है, तो उसे अपना दायित्व निभाना ही चाहिए, पर एक बार उसकी जगह स्वयं को रखकर सोचिए। किसी विशेष दिन पर दस मिनट के लिए झाड़ू हाथ में लिए किसी सार्वजनिक स्थान पर फोटो खिंचवा कर सोशल मीडिया पर सफाई के लिए जागरूकता अभियान के नाम पर बड़ी सी पोस्ट के साथ वो फोटो डालने वाले हम लोग उस छोटे से वेतन में रोज़ कचरा उठा सकते है? ना हमारे लिए कचरा उठाना संभव है, ना ही नालियां साफ कर पाना।

कभी सुबह 6 बजे उठ कर शहर की सड़कों पर निकलिए। ये लोग आपके शहर की सड़कों को साफ करते नज़र आएंगे, ताकि दो या तीन घंटे बाद आप फिर से इन्हें गन्दी करना

शुरू कर सकें। मुम्बई की भीड़ भरी लोकल ट्रेन में सफर करते समय हम लोग अपनी असुविधाओं के लिए रेलवे को तो जी भर के कोस लेते हैं। पर क्या कभी हमने रेल की खिड़की से बाहर निहार कर रेल पटरियों पर काम करते उन रेलवे कर्मचारियों को धन्यवाद कहा है, जो रात दिन अपना पसीना बहाते है। उससे हम समय पर और सुरक्षित सफर पूरा कर पाते हैं।

सरकारी बस में बिना टिकट यात्रा करते हुए हम बस परिचालक को आंख मार कर आधे पैसे में सेटिंग करते हैं। फिर घर आ कर घाटे में चल रही रोडवेज के लिए सरकार की दोषी ठहराते हैं। रोजमर्रा की जिंदगी में हर जगह होने वाली असुविधाओं के लिए जाने अनजाने कम या ज्यादा, दोषी हम ही है। इसीलिए दूसरों को या प्रशासन अथवा सरकारों को दोषी ठहराने से पहले एक बार स्वयं के अंदर भी झांक कर देख लें कि हम कितने दोषी है। इस व्यवस्था से लिए और हमारा कितना योगदान है। चीजों को व्यवस्थित रूप से सुचारू रखने के लिए।

जब भी किसी को अच्छा करते हुए देखें तो उसे एक छोटा सा थेंक्स जरूर कहें। क्योंकि उन्हीं कुछ लोगों की वजह से हमारा ये सवा अरब की आबादी वाला देश जिन्दा है और हम लोकतंत्र की खुली हवा में सांस ले पा रहे हैं।

दीपक जैन चौरड़िया
कांकरोली, 94142-20853

आज ही प्रवेश लें

गर्मी की छुट्टियों में कम्प्यूटर सीखने का सुनहरा मौका

RS-CIT

एक परिपूर्ण कम्प्यूटर कोर्स

सरकारी नौकरी के लिए एक अनिवार्य योग्यता

सभी सरकारी कर्मचारियों को कोर्स करने पर
100 प्रतिशत फीस रिफंड व 675 रुपए अतिरिक्त प्रोत्साहन राशि

प्रशिक्षित फैकल्टी द्वारा प्रशिक्षण

Internet	MS Powerpoint	MS-Word	MS-Excel
ई-मेल अकाउंट खोलना	प्रजेंटेशन	बायोडेटा	बिजनेस प्लानर
ई-बुक्स पढ़ना	फोटो एलबम	निमंत्रण पत्र, प्रोजेक्ट रिपोर्ट	हफ्ते के कामो की सूची
विदेशी भाषा सीखना	सर्टिफिकेट	आई कार्ड	पॉकिटमनी प्लानिंग
टिकट बुकिंग	पोस्टर, ग्रीटिंग कार्ड	विज्ञापन/नोटिस	जमा-खर्च
यु टूयूब पर विडियो देखना	कम्पनी प्रोफाइल	लेटर पेड/ऐनवल्प	टेक्स केलकुलेटर
फोटो का ऑनलाइन स्टोरेज	बिजनेस प्रजेंटेशन	विजिटिंग कार्ड्स	फोन डेटाबेस, डाटा विश्लेषण

राज्य सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त

RKCL
IT shapes future
(Rajasthan Knowledge Corporation Limited)

ई लर्निंग पर आधारित New RS-CIT एक परिपूर्ण कंप्यूटर कोर्स ! www.rkcl.in

New **RS-CIT**

एक परिपूर्ण कम्पयूटर कोर्स

सनशाईन इंस्टीट्यूट

sunshininstitute9@gmail.com

हनुमान नगर, सांयों का खेड़ा मो. 7976752935, 9950084705

ICICI बैंक के पास बस स्टेंड, केलवा मो. 7976752935, 9950084705

अपने बिजनेस
को दें
बुलन्दियां
सस्ती दरों पर
जयवर्द्धन
पत्रिका में
विज्ञापन
प्रकाशित कराएं।

स्पेशल ऑफर
विज्ञापन साइज
5 X 8 CM
सिर्फ
₹1000/-

सम्पर्क
शक्ति एडवरटाइजिंग
C/O शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट कांकरोली, जिला-राजसमंद, 9414239648, 9649813798
Email : jaivardhanpatrika@gmail.com

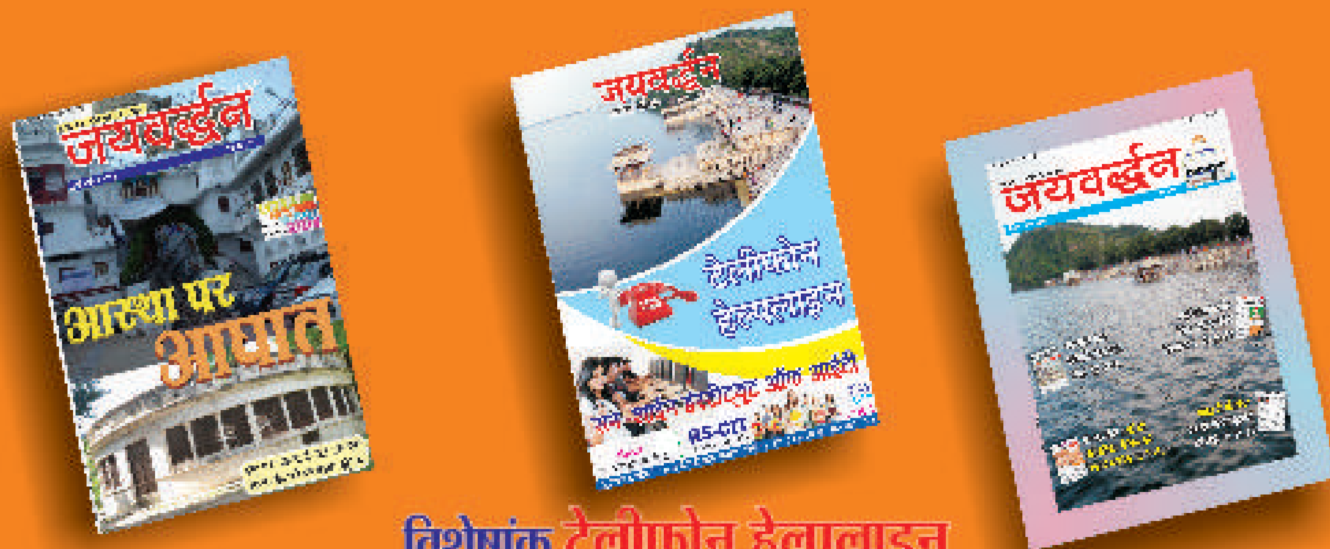

विशेषांक टेलीफोन हेल्पलाइन

मात्र 50 रुपए में प्राप्त करें।

मासिक "जयवर्द्धन" पत्रिका के ग्राहक बनें और आकर्षक डिस्काउंट पाएं

नाम- श्री/श्रीमती..

पता .... राज्य ....

फोन (निवास) ....मोबाइल ....ई-मेल ....

कृपया **जयवर्द्धन** के नाम से रु ....का डी.डी या चैक नं. ....

तिथि .... प्राप्त करें।

बैंक का नाम ....

(राजसमंद जिले से बाहर से भेजे गए चैक में कृपया 30/- रू अधिक भेजें।)

अवधि	अंकों की संख्या	कवर मूल्य	बचत	सब्सक्रिप्शन दर
1 वर्ष	12	240	90	150 रुपए

कृपया इस फार्म को भरकर डी.डी. या चैक के साथ हमें इस पते पर भेजें,

कार्यालय पता : C/O शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट कांकरोली,

जिला-राजसमंद (राजस्थान) मोबाईल 9414239648, 9950084705

विशेष छूट के साथ मासिक पत्रिका की वार्षिक बुकिंग मात्र 150 रुपए में

नियम और शर्तें :

1. यह योजना केवल भारत में ही मान्य है।
2. विशेष पेशकश सीमित अवधि के लिए है।
3. राजसमन्द जिले के बाहर से भेजे गए चैक में कृपया 30/- रू. अधिक भेजें।
4. पत्रिका साधारण डाक द्वारा भेजी जाएगी तथा डाक गुम हो जाने पर जिम्मेदारी संस्थान की नहीं होगी। सूचना प्राप्त होने पर यदि अंक उपलब्ध रहता है तो पुनः निशुल्क प्रेषित कर दिया जाएगा।
5. पहले अंक को आप तक पहुंचने में एकाध सप्ताह लग सकता है।
6. कूरियर रजि.डाक से मंगवाने के लिए ग्राहक को कूरियर रजि. डाक खर्च अतिरिक्त वहन करना होगा।
7. सभी विवादों का न्याय क्षेत्र राजसमन्द न्यायालय के अधीन होगा।

दसवीं-बारहवीं में उपयुक्त विषय चयन ही छात्र के उज्जवल भविष्य का आधार

उच्च माध्यमिक परीक्षा अर्थात् 12वीं कक्षा की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद प्रत्येक विद्यार्थी एवं अभिभावक यह विचार करते हैं कि हम अपनी संतान को कौनसा पाठ्यक्रम अर्थात कॉर्स कराएं, जिससे हमारी संतान जल्दी से जल्दी सफल हो सके। अन्तत: प्रत्येक अभिभावक अपनी संतान को सफल होता हुआ देखना चाहता हैं। प्रत्येक विद्यार्थी भी एक उपयुक्त पाठ्यक्रम अर्थात कॉर्स करना चाहता हैं, जिससे उसे रोजगार मिलने में आसान राह मिल सके।

विद्यार्थियों को उस राह पर चलने के लिए निम्नलिखित शैक्षणिक पाठ्यक्रमों की जानकारी अवश्य ही मदद करेगी। हम जानते हैं कि 10वीं एवं 12वीं कक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात विद्यार्थी कला वर्ग, विज्ञान वर्ग, वाणिज्य वर्ग एवं कृषि विज्ञान वर्ग में स्नातक (UG UNDER GRADUATE) कर सकता हैं। प्रथमत: हम कला वर्ग के बारे में बात करेंगे।

कला वर्ग (स्नातक) बीए, तीन वर्षीय पाठ्यक्रम

प्रथम वर्ष में विषय हिन्दी साहित्य, संस्कृत साहित्य, अंग्रेजी साहित्य, भूगोल, इतिहास, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, दर्शन शास्त्र, मनोविज्ञान आदि विषयों का चयन कर स्नातक किया जा सकता हैं।

स्नातकोत्तर (एमए) दो वर्षीय

उपर्युक्त विषयों को अपनी रूचि के अनुसार चयन कर स्नातकोत्तर किया जा सकता हैं। स्नातकोत्तर (एमए) पीजी के बाद आप 60 प्रतिशत के साथ राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा (नेट) की परीक्षा दे सकते हैं। यह परीक्षा केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएससी) आयोजित करता हैं। यह परीक्षा जुलाई माह में आयोजित करता हैं। जिस विषय में आपने पूर्वार्द्ध उत्तीर्ण कर लिया हैं, तब भी आप नेट की परीक्षा दे सकते हैं। नेट के बाद आप किसी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से विद्या वाचस्पति (पीएचडी) कर सकते हैं। न्यूनतम दो वर्ष में आप पीएचडी कर सकते हैं। नेट परीक्षा उत्तीर्ण करने पर प्रतिशत के आधार पर कनिष्ठ अनुसंधान अध्योतावृति छ्त्रक्र्न शोधवृति 35000 रुपए प्रतिमाह विश्वविद्यालय अनुदान आयोग त्तष्ट प्रदान करता हैं।

विज्ञान स्नातक बीएससी

विज्ञान वर्ग : विज्ञान वर्ग दो भागों में विभाजित किया जाता हैं। प्रथम गणित (मैथ्स) वर्ग में विद्यार्थी गणित, भौतिक तथा रसायन विषय लेते हैं। वहीं जीव विज्ञान वर्ग में जीव विज्ञान, वनस्पति शास्त्र तथा रसायन शास्त्र का अध्ययन करता हैं। बीएससी (मेथ्स) एवं बीएससी (बायो) विद्यार्थियों की रूचि अनुसार वे 10वीं कक्षा उत्तीर्ण करने के बाद गणित (मेथ्स) लेकर जल एवं वायु सेना में आवेदन कर सकता हैं। जो विद्यार्थी बीएससी करना चाहते हैं, प्रथम वर्ष में दोनों वर्गो में उपर्युक्त विषय लेकर प्रवेश ले सकते हैं।

स्नातकोत्तर (पीजी) M.S.C.

विज्ञान स्नातक पूर्ण करने के पश्चात् विद्यार्थी एमएससी में उपर्युक्त विषय में प्रवेश लेकर अध्ययन कर सकते हैं। गणित, भौतिक शास्त्र, रसायन शास्त्र, जीव विज्ञान, वनस्पति शास्त्र, पर्यावरण अध्ययन, बायोटेक्नोलॉजी आदि में कर सकते हैं।

विद्यार्थी स्नातकोत्तर (M.Sc) उत्तरार्द्ध में उत्तीर्ण होने के बाद ही एमएससी के विषय में सीएसआईआर द्वारा आयोजित राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा (नेट) की परीक्षा दे सकते हैं। यह परीक्षा महाविद्यालयों में सहायक आचार्य के पद पर कार्य करने की योग्यता प्रदान करती हैं।

विज्ञान विषयों में स्नातकोत्तर करके विद्यार्थी एक सुनहरा भविष्य प्राप्त कर सकते हैं।

विद्या वाचस्पति पीएचडी

स्नातकोततर एमएससी और नेट के बाद विद्यार्थी विद्या वाचस्पति के लिए किसी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय में प्रवेश ले सकता हैं। चयन के पश्चात विश्व विद्यालय अनुदान आयोजन यूजीसी शोधार्थी को शोधवृति 35000 रुपए प्रतिमाह प्रदान करती हैं, जिसमें शोधार्थी अपना शोधकार्य आसानी से पूर्ण कर सकता हैं। यह शोधवृति प्रत्येक वर्ग के बालक-बालिकाओं को मिलती हैं और विशेष वर्ग की शोधवृति उनके वर्गानुसार मिलती हैं। कनिष्ट अनुसंधान अध्योतावृति जेआरएफ प्रतिशत के आधार पर चयन होता हैं।

कृषि विज्ञान (Agriculture)

विद्यार्थी 10वीं कक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात 11वीं कक्षा में कृषि विज्ञान विषय को चुन सकता हैं। कृषि विज्ञान एक विस्तृत विषय हैं, क्योंकि भारत एक कृषि प्रधान देश हैं। इस पाठ्यक्रम में भरतपूर रोजगार के अवसर उपलब्ध हैं। 12वीं कक्षा उत्तीर्ण करने के बाद कृषि विज्ञान में स्नातक यूजी 4 वर्षीय करने के लिए एक प्रवेश परीक्षा संयुक्त प्रवेश परीक्षा (छ्रश्वज्ञ) बीकानेर कृषि विश्वविद्यालय बीकानेर आयोजित करता हैं। यह परीक्षा प्रतिवर्ष जून माह में आयोजित करवाई जाती हैं। परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद वरीयता सूची (मेरिट) के आधार पर महाविद्यालय आवंटित किया

जाता हैं, उचित शुल्क जमा कराने के बाद। तत्पश्चात विद्यार्थी कृषि विज्ञान में स्नातक (4 वर्ष) (G) कर सकता हैं। कृषि विज्ञान के विषय जीव विज्ञान, रसायन विज्ञान, शस्य विज्ञान, उद्यान विज्ञान एवं पशुपालन एवं दुग्ध विज्ञान का अध्ययन करना होता हैं।

स्नातक बीएससी कृषि विज्ञान 4 वर्षीय

विद्यार्थी 12वीं कक्षा उत्तीर्ण कर आवंटित महाविद्यालय में प्रवेश ले सकते हैं। इन विषयों का चयन कर अध्ययन किया जाता है। बेसिक साइंस एंड ह्यमेनिटीज, कृषि विज्ञान अर्थशास्त्र, कृषि विज्ञान अभियांत्रिकी, कृषि विज्ञान एनोटोमोलॉजी, कृषि विज्ञान एक्सटेनशन एज्युकेशन, कृषि विज्ञान सूक्ष्म जीव विज्ञान, कृषि विज्ञान सांख्यिकी, शस्य विज्ञान, उद्यान विज्ञान, क्रोप प्रोटेक्शन, जैनेटिक्स एंड बायोटेक्नोलॉजी, पर्यावरण अध्ययन आदि।

स्नातकोत्तर कृषि विज्ञान (एमएससी)

विद्यार्थी कृषि स्नातक उत्तीर्ण करने के बाद स्नातकोत्तर कृषि विज्ञान की प्रारम्भिक प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात स्नातकोत्तर में प्रवेश ले सकते हैं, जिसमें इन विषयों के समूह को चुन कर अध्ययन करना होता हैं। इन विषयों का चयन कर स्नातकोत्तर एमएससी की जा सकती हैं। कृषि वनस्पति शास्त्र, कृषि बायोटेक्नो, कृषि रसानयन, कृषि अभियांत्रिकी, शस्य विज्ञान, उद्यान विज्ञान मयकोलॉजी, सूक्ष्म जीव विज्ञान, पादप फिजीऑलजी, पादप संरक्षण बीज तकनीकी, मृदा विज्ञान एवं मृदा संरक्षण, टी हसबेंडरी, सेरीकल्चर आदि। स्नातकोत्तर अध्ययन के बाद विद्यार्थी नेट की परीक्षा दे सकते हैं। प्रतिशत के आधार पर कनिष्ठ अनुसंधान अध्योतावृति छ्रक्रस्न प्राप्त कर सकता हैं। नेट/कि.अ.अ. उत्तीर्ण करने के बाद विद्यार्थी किसी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से विद्या वाचस्पति पीएचडी कर सकते हैं।

वाणिज्य वर्ग

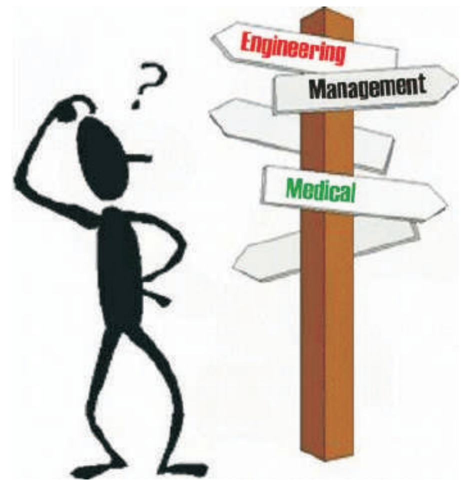

विद्यार्थी 10वीं कक्षा उत्तीर्ण कर रूचि अनुसार वाणिज्य वर्ग 11वीं में प्रवेश ले सकते हैं। 12वीं उत्तीर्ण करने के बाद विद्यार्थी वाणिज्य संकाय में (प्रथम वर्ष) में प्रवेश ले सकते हैं।

स्नातक (बी.कॉम)
तीन वर्षीय पाठ्यक्रम

12वीं के बाद विद्यार्थी प्रथम वर्ष में प्रवेश ले सकता हैं। विद्यार्थी इन विषयों को लेकर अध्ययन कर सकता हैं। व्यावसायिक प्रबंधन, व्यावसायिक अर्थशास्त्र, सांख्यिकी, भारत में अर्थशास्त्रीय पर्यावरण, फायनेनल अकाउंट, व्यावसायिक कानून, कम्पनी लॉ, बैंकिंग, आयकर, बिजनेश, कम्प्यूनिकेशन आदि।

स्नातकोततर (एम.कॉम) दो वर्षीय

स्नातक (बी.कॉम) के बाद विद्यार्थी स्नातकोत्तर में रूचि के अनुसार बिजनेश एडमिनिस्ट्रेशन (थ्योरी पेपर), अकाउटेंसी एंड स्टेटिक्स, बीएसटी (न्यूमेरिकल) में अध्ययन कर सकते हैं। विद्यार्थी (एम. कॉम) पूवार्द्ध उत्तीर्ण कर केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा आयोजित राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा नेट दे सकते हैं। प्रतिशत के आधार पर कनिष्ठ अनुसंधान अध्योतावृत्ति (JRF) शोधवृति प्राप्त की जा सकती हैं। नेट के बाद व्याख्याता एवं सहायक आचार्य के पद पर आवेदन कर सकते हैं।

विद्यावाचस्पति (पीएचडी)

विद्यार्थी स्नातकोत्तर (एम. कॉम) अथवा नेट उत्तीर्ण करने के बाद किसी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से विद्यावाचस्पति (पी.एच.डी.) कर सकते हैं।

बीए- बीएड एवं बीएससी- बीएड (4 वर्षीय पाठ्यक्रम)

राज्य सरकार ने 12वीं कक्षा (कला वर्ग एवं विज्ञान वर्ग) से उत्तीर्ण करने के बाद चार वर्षीय समेकित पाठ्यक्रम प्रारम्भ किया हैं, जो सत्र 2017-18 से संचालित हैं। जो विद्यार्थी शिक्षक बनना चाहते हैं। उनके लिए यह पाठ्यक्रम उत्तम हैं। वाणिज्य वर्ग के विद्यार्थी कला वर्ग से बीए- बीएड में प्रवेश परीक्षा PTET उत्तीर्ण कर ले सकते हैं।

बीए-बीएड (समेकित पाठ्यक्रम)

विद्यार्थी कला वर्ग के सभी वैकल्पिक विषय हिन्दी साहित्य, संस्कृत साहित्य, अंग्रेजी साहित्य, उर्दू, राजस्थानी संगीत, मनोविज्ञान, इतिहास, राजनीतिक विज्ञान, भूगोल, अर्थ शास्त्र, समाज शास्त्र आदि का अध्ययन कर सकता हैं। साथ ही विद्यार्थी बीएड के विषयों का अध्ययन भी करता हैं।

बीएससी- बीएड (समेकित पाठ्यक्रम)

विज्ञान वर्ग में विद्यार्थी दोनों वर्गो 1 गणित (मेथ्स), 2 जीव विज्ञान (बायो) अर्थात गणित, भौतिक शास्त्र एवं रसायन शास्त्र तथ जीव विज्ञान, वनस्पति शास्त्र एवं रसायन शास्त्र विषय ले कर अध्ययन कर सकता हैं। बीए-बीएड एवं बीएससी बीएड 4 वर्षीय पाठ्यक्रम में विद्यार्थियों के एक वर्ष की बचत होती हैं। चार वर्ष के पाठ्यक्रम में दो उपाधियां प्राप्त करते हैं।

द्वय लेखक :

डॉ. राजकुमार खटीक
सहायक आचार्य (हिन्दी)

दीपिका शर्मा
सहायक आचार्य (मनोविज्ञान)

घणी हमजणाई हाऊ नी

वात नादवारा रे भड़े विजलाई गाम री हैं, वात घणी जुनी नी है। नादद्वारा सेर री पंचात (नगरपालिका) रा वोट पड़या जदी री हैं। विजलाई गाम रे भड़े एक रेवा खावा पीवा री सरकारी होटल (R.T.D.C.) हैं। वटे एक विवा रो मोको हो। विवा एक बम्बोई रा हेठजी रे हो। विवा रो हगळो बन्दोबस्त घरधणी अटारा अडंगा ती वाकब नी वेवा ती एक हमजणा ने हुंपी राख्यो हो।

हमजणो वने केवे है, जो थोड़ो जिदीलो वे, थोड़ो आगतो वे, थोड़ो हातरो हातरो बोले, थोड़ो ओचो वे, थोड़ो नागो वे, पण घर वगाडु नी वे। वंडा वेण्डा पणाती सब काम वगड़ी जाय तो भी आपाणी हुशियारी नी छोड़े या हमजणा री जात ओर ओलक वे।

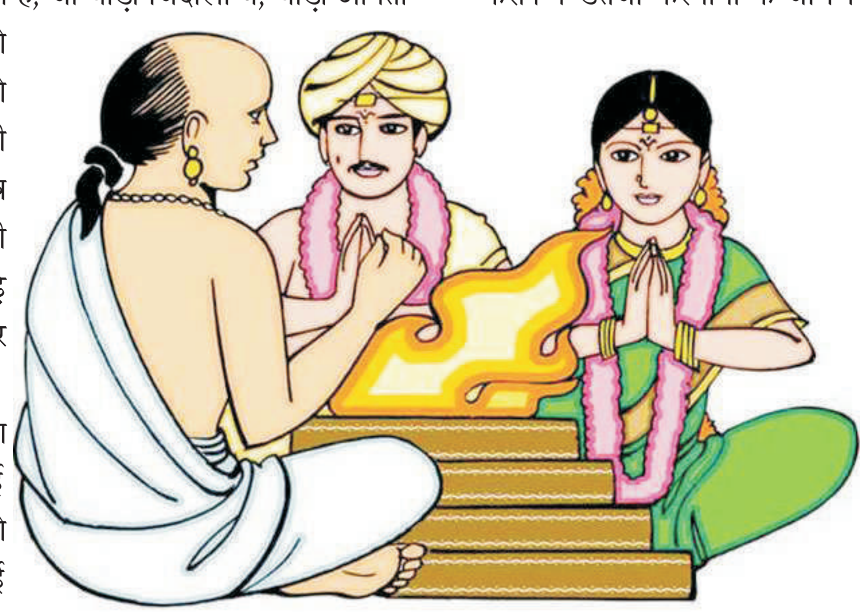

हमजणे आपाणा बन्दोबस्त में हलवाई बुलाई लीदो। तंबू रो ठेको दीदो, रोशन्या रो ठेको देई दीदो, ढोली आई गियो, खवास वंडो काम मन लगाई न करवा लागो। नादवारा लाल बजार रा हेठजी गोपीलाल जी जीमण रो सामान मेली दीदो है।

माण्डपो तोरण, थंब ती लेई सफाई ओर ठामड़ा माजवा वाला तक दोड़ी दोड़ी ने काम करवा लागी गिया। पण्डतजी (फेरा देवा वाला) धोळा गाबा पेरी ने हमजणा रा तालूका में नमी नमी ने आपणो परच्यो देई रिया हैं।

विवा रो धणी (बम्बोई वालो) मलक मलक राजी वेतो जाई रियो हो, ने शेरवानी हरिको लाम्बो विलायती जामो पेरी ने फरी रियो हो। सापसूप जगा में जीमण वणी रियो हो। तंबू एक हरिका लागा, ऊबा ऊबा खावा रो इन्तजाम वेई रियो हो।

मोटी मोटी चलकणी रोशन्या लगी गी। ढोली बांगा मेली मेली ने गाई रियो हो। पण्डतजी अंगरकी पेरीने आया ने होम रा सामान री पुड़किया देकी रिया हा, ने लाइटा परी गी। जीमण चलू वेई गियो हो, मनक जिमा ने आवा लागी गिया हा। जिमाने मोटा मोटा मनक आई जाई रिया हा ओर विवा में हमजणा री तारीफ करी रिया हा। दिल्ली रा नेता ती लगाई ने जेपर ओर नादवारा रा वार्डपंच रे भी नुतो हो। क्यूंकि बन्दोबस्त एक हमजणा रो हो। हमजणे बंदोबस्त में कई कसर नी राकी, हलवाई जिमण हाऊ वणायो, सब या वात केई रिया हा।

अबे हमजणे पण्डजी पे धौंस जमाई कियो के पण्डतजी आप जीमण जीमी काड़ो ने छोरा छोरी रे फेरा देवा री त्यारिया चालू करो। पण्डतजी फरमायो के जीमण मू फेरा देई ने पचे जिमूला। पण्डतजी परबात रा भूका हो। पण मन में जाण्यो के फेरा देई ने पचे डटी ने खावाला, जण्डो मजो ओर वेला। पण विदी रा विदान आगे कण्डी भी नी चाली। आज पण्डतजी पे हमजणा रो गोटो कितर घूमे ने पण्डजी रे लूरो कितर चाले। सब जयवर्द्धन पत्रिका भणवा वाला आणंद लिज्यो।

लगन गदळक्या हा (लग्न गोधुली वेला)। पण्डतजी पूजा होम शांति री त्यारी करी ने ढोली ने केवाड्यो के अबे थूं ढबी जा मूं मंतर बोलू। ढोली देक्यो ठीक वात, अबे पण्डतजी रो कियो कुण टाली सकी।

ढोली आपाणा झांजर, ढोला छोड़ी ने पेट पूजा करवा परो गियो। अबे पण्डतजी ढोली ती जोरू मंतर बोलवा लागा जीमावाला रो ध्यान पण्डतजी आड़ी परो गियो। पण्डतजी होम कराई ने छोरा छोरी रे हाथ में मेन्दी मेली ने हतळेवो हान्दी दी दो।

अबे थोड़ी देर केड़े विन्दणी हबुका मारे। विन्दणी री हातणा, विन्दणी री भोजाया, विन्दणी ने धिजो बन्दावे। पण थोड़ी देर केड़े तो विन्द खुद हबूका मारवा लागो। विन्द भी घणी देर तक हबुका मार्‌या, पण विन्द आड़ी कंडोई ध्यान नी गियो।

(जयवर्द्धन पत्रिका भणवा वाला ने या वात काणी खतम विया केड़े पतो पड़ेला कि विन्द विन्दणी हबुका क्यूं मारे)

वियो कई हो विन्द विन्दणी रा हाथ बलवा लागा। विन्द घणी देर काटो वियो। वणी देक्यो के पेली दाण हाथ में एक नरम नरम हाथ आयो यो ऊनो-ऊनो वेला, जो बलतो वेला। छोरा छोरी दोया री याइज गत वणी ओर दोया रो मातो भन्नावा लागो।

यू वेता वेता हतलेवो खोलवा तक री वेला हुदी पण्डतजी मंतरा री जोर-जोर ती गा करता रिया। क्यूंके विवा रो पंडत जंडा माता थोड़ा ऊंचा विया करें।

ज्यूई हतलेवो खोल्यो के पण्डतजी रो रंग उतरयो। हतलेवा में मेली मेन्दी नी राची, घणी पण्डतजी हतलेवो हींचवा री आगत कीदी। पण पण्डतजी एक दाण में हमजणा री नंगे में आई गिया। हमजणो पण्डजी हामु कान्दा कान्दा हरिकी आका काड़ी ने कियो के पण्डतजी हतलेवो हिचवा पेली वात वताओ हांची, के या मेन्दी क्यूं नी राची।

हतलेवो खोलती टेम पण्डतजी रो रंग उतरयो (फीको पड़ी गियो)। पण अबे साफ उड़ी गियो, पण्डतजी रो मातो भचेड़ा खावा लागो। पण्डतजी थर-थर कांपे। हमजणा ने पण्डतजी कई जवाब वणे नी आयो। हमजणो के पण्डतजी था मंतर हुदा नी भण्या, जतरे किशोरजी बाबूजी आई ने हमजणा ने हमजावे के वेणो जो वियो। हमजणे बाबूजी ने कियो के बाबूजी या थाणी स्कूल नी हैं।

जतरे नादवारा रा परमोदजी आई ग्या। वणा कियो हतलेवो हिचणो है, ने पण्डत ने माफ करो या हुणी ने पण्डतजी रे थोड़ो लुरो सालतो बंद वियो। पण हमजणे जट बुट वजाड़ी ने कियो साहब होकम या थाणी कविता नी है कि शर्ट कंडी ओर री है, पेरे कोई ओर है। खेत कंडो ओर रो है, ने जोते कोई ओर है। या अणा छोरा छोरी रे जिन्दगी रो सवाल है ?

अबे के वात वदवा लागी हमजणे हतलेवो चालू नी करवा दीदो। पण्डतजी रे डील में काळा पीला आवा लागा। जतरा में लाल वाग ती भारत देश रा नामी कवि आई पोंच्या। वणा हमजणा ने घणो लपेटा में लीदो, केई वाता हमजावा लागा, तो पण्डतजी रे जीव में जीव आयो। पण हमजणो हमजे कई ?

वण्डा तीरे एक एक वात रो तोड़ जो हो, हमजणो के कविराज थां तो पेली पेली राता री कविता बोलो, पण या वात अणा विन्द विन्दणी रे पेली पेली राता ती पेली री है। अबे बम्बोई वालो (वीवा रो धणी) वण्डा पग डगवा लागा। वो दरपतो दरपतो हमजणा रे भड़े भड़े हरके। हमजणे कियो ये पण्डत आपने वेण्डा वणावे या तो अणारी गलती पकड़ाई गी। नितर नत ये कतरी खोटा करें। अबे मोहल्ला रा नेताजी आया कियो पण्डतजी आप माफी मांगो, ने हमजणा ने कियो आप हतलेवो चालू करावो। नेताजी ने हमजणे लपेटा में लीदा ने कियो के थां थारो काम करो। अठे अणा छोरा छोरी री जिन्दगी रो सवाल है। हमजणे तो टगी पकड़ी न बैठ ग्यो।

जतरा में आपरती पण्डतजी राजी वेवा री शकल वणाई हमलणे पाचो भाल्यो तो भारत देश री मोटी पंचात रा (दिल्ली री पंचात) नेताजी ने हमजणा ने कियो पण्डतजी ती गलती वी वे तो अणा ने दकणा कम दिज्यो पण हतलेवो चालू करावो। न्याव री वात याईज है।

जदी मोटा नेताजी री नी चाली तो पो मीना (पोष मास) में पण्डतजी री अंगरकी आली वेईगी। अबे नादवारा पंचात रा हाकम आपणो भाग्य आजमायो। पण वणा रे भी जस नी लिक्यो हो। अबे तो पण्डजी रो कानड़ो टन टन करवा लागो।

अबे पण्डतजी रे गाम रा बापू पदारया, वणा ने देकी ने पण्डतजी री आका में चमक आई गी। पण्डतजी मन में विचार कीदो के अबे मारे बापू पदारी गिया है। मारो छूटको वेई जावे ला, ने अणी हमजणा री ड्रूंटी ठकाणे लेई ले ला। हमजणा ने बापू सब वात हुणी कियो के मूं एक शब्दो आदमी हूं। थूं हतलेवो चालू करा। हमजणे कियो के बापू राजनीति में 1 वोट सु जीत परी वेवे, पण मैं घणा घर माण्ड्या है, ने घणा छोरा छोरी पनाया है। जदी बापू वात वती वगड़ती देकी तो हतलेवा रा पया ढोली ने दीदा के थू हतलेवो हींची दीजे। ढोली अबे बापू री तारीप मे हाउ हाउ गावा लागो। क्यूंके हतलेवो तो हींचवा में फोड़ा पड़ रिया हा।

जदी अबे तो अति वेईगी। पण्डतजी री तो बिलकुल आसंग नी री। जीव ऊकळी ऊकळी ने डील ऊनो लाल वेई गियो हो, तो अबे परमोदजी वगड़ी वात ने हुदार वा हारू एक दाण पाछी कोशीस कीदी। परमोदजी वणा रा खल्या मऊ हाथ गाली ने टंडिर्‌यो निकाळी ने वात करवा लागा। एक नामी लेखणिया ऊ वात करी ने बलाया। वे जर जपट्या पे बेई ने होटल आई ग्या। परमोदजी वणाने पूरो टंटो हमझायो।

पचे लेखणिया अटी वटी भालवा लागा। भाळी भळाई ने हमजणा रे कान में एक वात की। ने हाथ में कई दीदो, तो एक मिनट में हमजणा रो डग्यो थको भमरो ठकाणे आई गियो और हमजणो पण्डतजी ने केवा लागो हतलेवो चालू करावो।

मोटी मोटी तोपा देक्यो ने विचार कीदो के अणी लेखणिये हमजणा ने अस्यो कई कियो, जो अणी पण्डतजी रो पूचड़ो छोड़ी दीदो। लेखणिये, हमजणा रे हाथ में एक फाटी थैली दीदी, जो वटे चंवरी रे भड़े पड़ी ही। दादा थें गरम मसाला री पुड़की पण्डतजी ने देई दीदी, न हलवाई ने मेन्दी री पुड़की गरम मसालो हमझी ने पकड़ाई दीदी। मेन्दी दाल में नाकी जो सब गऊ रा जाया खाई ने परा गिया। गरम मसाला री पुड़की ऊ थां हतलेवो हन्दी दीदो, अबे हाथ कटऊ राचे।

छोरा छोरी हात गरम मसाला ती बळी रिया हा...। अणी वाते आपा कई खाई रिया हा। अणी युग में ध्यान राकणो ओर हमजणा रे चाळे कम लागणो।

सुदर्शन श्रीमाली,
प्रथम वर्ष वाणिज्य बीएन कॉलेज उदयपुर
गांव मजा, राजसमंद

बनो सच की ताकत
जयवर्द्धन पत्रिका
आपकी खबर
अब आपकी जुबानी..
अब आप
भी भेज सकते हैं
खबर

आपके शहर व गांव से जुड़ी
मूलभुत समस्या, नवाचार,
आयोजन, मुद्दे, लेख,
चुटकले, कहानी, कविता
हमें भेजे
E-Mail : jaivardhanpatrika@gmail.com

रेनकोट ही रेनकोट

बाजार (जो आजकल हमारे, आपके घर तक घुस आया है) में निकलते ही आपकी नजर ऐसे कई टंगे/लटके आकर्षक निमंत्रणों पर पड़ ही जाती है। जाहिर है अभी जेठ की गर्मी पड़ रही है और 'दुबले को दो आषाढ़' की बजाय मामला 'पिघले को दो जेठ' वाला होने वाला है। ऐसे में 'कूलर ही कूलर', 'पंखे ही पंखे' या 'बर्फ ही बर्फ' ('एसी' के 'ऐसे' आमंत्रण देखने को नहीं मिलते) वाली प्रचार सामग्री जरुरतमंदों को अपनी तरफ खींचती ही है। ऐसा भी नहीं है कि गर्मी में ही इस तरह बुलाया जाता है, जब रोहिणी तपेगी तब से कस्बे के जान, अजान, सुजान ज्योतिषीगण बाकायदा प्रेसनोट जारी कर बताएंगे कि इस बार मानसून 'सून कम' होगा या नहीं या अमुक फलां नक्षत्र में जोरदार बारिश होगी। कम होगी, नदी पोखर तालाब भरेंगे, बहेंगे या नहीं, इनकी बरसाती भविष्यवाणियां मौसम विभाग के सरकारी पूर्वानुमानों से एकदम अलग ही जाती हैं और जो ऊपर बैठा 'मौसम मास्टर' है वो इन सबसे अलग अपनी दुलकी चाल से 'कभी खुशी कभी गम' स्टाइल में 'कहीं सूखा तो कहीं बारिश' लाकर दुबक जाता है और हमारी 'प्रार्थनाएं' भी सूख जाती है या बह निकलती हैं, तब भी बाजार में सड़कों पर 'छाते ही छाते', 'रेनकोट ही रेनकोट', 'बरसाती ही बरसाती' या 'तिरपाल ही तिरपाल' के विज्ञापन हमें बुलाते नजर आते हैं। पुराने लोग कह गए कि 'पूर आने से पहले पाल बांध लेनी चाहिए' मेरे एक मित्र ने वो सलाह गांठ बांध कर रख ली है। वे आसमान में बादल गहराएं उसके पहले ही अपने चमड़े के जूतों को तेल पानी कर पहले कागज फिर कपडे की थैली में पूरे चातुर्मास 'शयन' के लिए रख कर प्लास्टिक के पाद त्राण धारण कर लेते हैं। इस तरह उनके चमड़े के जूते अब तक बीसेक बरसात तो (नहीं) देख चुके हैं। उनका कहना है जूतों पर क्या खर्चा करना? बादल घिरते ही छतरी घर से लेकर चल देने वाले तो बहुतेरे लोग हैं। समाज में जो चार बूंदे टपकते ही छतरी तान लेते हैं। फिर उपहास का पात्र भी बनते हैं।

ऐसे ही शीत ऋतु आते ही बाजार 'कम्बल ही कम्बल', 'रजाइयां ही रजाइयां', 'चादरें ही चादरें', 'हीटर ही हीटर' ही नहीं 'गजक ही गजक' के लटके बैनरों से पट जाता है और हम सब भी आसानी से पट ही जाते हैं।

बहरहाल कम से कम शब्दों में अपना सन्देश उपभोक्ताओं तक पहुंचा देने की इस कला का मैं कायल हूं और रविवार के दिन खाली सड़कों पर दुपहिया वाहनों की लम्बी सेल जहां 'गाड़ियां ही गाड़ियां' लिखा होता है, खूब लुभाती हैं, जिन्हें गाड़ी लेना ही नहीं है। वे भी रूककर एक दो गाड़ियों पर हाथ आजमा ही लेते हैं। इस सीजन में सबसे ज्यादा 'तरबूज ही तरबूज' की टैगलाइन सबसे ज्यादा आकर्षित करती है, जो 30-40 रुपए में किसी एसी,कूलर या पंखे से ज्यादा कलेजे तक ठंडक पहुंचा देती है।

कंट्रोल की दुकानों पर चाहे 'राशन ही राशन' लिखा मिले न मिले नेताओं के आलीशान बंगलों पर 'भाषण ही भाषण' 'आश्वासन ही आश्वासन' या आसन्न चुनावों के मद्देनजर 'वादे ही वादे' के बैनर जरुर फड़फड़ाते नजर आना चाहिए, जिससे समझ में आ जाए कि यह हमारे किसी रहनुमा का निवास है।

बहरहाल, इन दिनों इस सबसे हटकर मीडिया में चल रही इन हेडलाइन्स से चिंतित और दुखी हूं- 'दुष्कर्म ही दुष्कर्म', 'बलात्कार ही बलात्कार', 'गैंगरेप ही गैंगरेप' अखबार के पहले पन्ने से लेकर आखिर तक गांव गांव शहर- शहर यही खबरें चल रही हैं। दोस्तों हमारा समाज पहले तो इतना नीचे नहीं गिरा था।

माना कि 'भू जल स्तर' काफी नीचे जा चुका है, लेकिन हमारी हमारे समाज की आंखों का पानी इतना नीचे चला जाएगा। ऐसा तो कभी सोचा न था कि जमीन के भयावह उत्खनन ने जमीन को इस कदर पोला कर दिया होगा कि चारित्रिक रूप से हम इसमें इतने गहरे धंसते चले जाएंगे, जहां से बाहर निकलना भी मुश्किल हो जाएगा। जब समाज सुधारने का दावा करने वाले संत प्रवचनकार भी 'सुन्दर काण्ड' की जगह 'बलात्कार काण्ड' पर उतर आएं तो समाज कहां जाए? कोई तो बताए कि हम बताएं क्या?

मुकेश जोशी
61 मानसरोवर कॉलोनी,
श्रीरामनगर के पीछे, उज्जैन
मो. 099263-00973

तीन दिवसीय नि:शुल्क बत्तीसी परामर्श शिविर 13 जुलाई से

राजसमंद @ जयवर्द्धन न्यूज. शहर के स्टेशन रोड पर स्वास्तिक सिनेमा से आगे शक्ति उद्योग के पास अंकुर डेंटल क्लिनिक में तीन दिवसीय नि:शुल्क बत्तीसी परामर्श शिविर आयोजित होगा। शिविर सुबह 9 से दोपहर 2 बजे आयोजित होगा, जिसमें चिकित्सा विशेषज्ञ द्वारा बत्तीसी (दांत) संबंधी परामर्श दिया जाएगा। ढीली बत्तीसी को स्थिर करना, पुराना बत्तीसी संबंधी कोई समस्या अथवा नई बत्तीसी लगाने के लिए भी परामर्श दिया जाएगा। शिविर संबंधी किसी भी जानकारी के लिए 94139-75510 पर संपर्क किया जा सकता है।

शक्ति स्पोर्ट्स

एक ही जगह पर
सभी तरह की खेलकूद सामग्री
मिलने का एकमात्र स्थान

जेके मोड़, शास्त्री मार्केट, कांकरोली
जिला राजसमंद, 9414473275, 94142-39648

भीम का प्रगतिशील पथ पर अग्रसर शत् प्रतिशत परिणाम देने वाला एक मात्र विद्यालय

गुरुकुल विद्या मंदिर उच्च माध्यमिक विद्यालय, भीम

कक्षा नर्सरी से 12वीं तक | प्रवेश प्रारम्भ

कृषि विज्ञान, जीव विज्ञान, गणित, भूगोल, चित्रकला, हिन्दी साहित्य

भीम क्षेत्र का एक मात्र निजी विद्यालय जहां NCC प्रारंभ

कृषि विज्ञान की छात्राओं को प्रतिवर्ष 7000 रु. की छात्रवृति व 10वीं, 12वीं फेल छात्र-छात्राओं को गारंटी से पास करवाने हेतु सम्पर्क करें।

RTE के तहत 25 प्रतिशत नि:शुल्क प्रवेश कक्षा 6 से डिफेंस प्रशिक्षण हॉस्टल सुविधा, वाहन सुविधा।

होटल विजयदीप के पीछे, इन्द्रा कॉलोनी, भीम जिला-राजसमंद मो. 9461547124, 9950857124, 6375522715

जीवन ज्योति क्लिनिक एण्ड लेबोरेट्री
जीवन ज्योति डेन्टल क्लिनिक

डॉ नीरज आचार्य
BHMS, CMS
Mob. 9460632683
E-mail : drneeraj13@gmail.com

डॉ. स्वाति आचार्य
BDS, दन्त रोग विशेषज्ञ
Mob. 9549146678
E-mail : drswatijoshi11@gmail.com

उपलब्ध सुविधाएं

- दांत-दाढ़ निकालना
- बतीसी बनाना
- दातों की केपिंग व सफाई
- दांतों की केपिंग व फिलिंग
- रूट केनाल का ईलाज

अन्य दांत संबंधित सभी प्रकार की बिमारियों का ईलाज

चावण्डा माता मंदिर के पास, शक्ति नगर, बस स्टेण्ड के पीछे, रेलमगरा जिला-राजसमंद (राज.)

भीम उपखण्ड का सबसे भरोसेमन्द, उच्च शैक्षणिक गुणवत्तायुक्त कम्प्यूटर सेन्टर

राज्य सरकार द्वारा मन्यता प्राप्त

RS-CIT

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर का एक परिपूर्ण कम्प्यूटर कोर्स

MCA | BCA | DCA | PGDCA | TALLY

श्री भीम प्रोफेशनल एकेडमी

रिद्धी सिद्धी विनायक प्रथम फ्लोर, आनन्द वाटिका के पास, पड़ाव-भीम, फोन नं. 02951-250177, कमलसिंह रावत 9610028100

महाराणा राजसिंह पेनोरमा, इतिहास से रूबरू होंगे पर्यटक

ऐतिहासिक राजसमंद झील की नौ चौकी पाल स्थित महाराणा राजसिंह के महल के जीर्णोद्धार और पेनोरमा का काम अंतिम चरण में है, जिसके जल्द पूरा होने की उम्मीद है। लोकार्पण सीएम से करवाने की तैयारी चल रही है। पेनोरमा में राजसमंद के संस्थापक महाराणा राजसिंह के जीवन से जुड़े प्रसंगों और इतिहास की जानकारी से पर्यटकों को रूबरू करवाया जाएगा। जीवन प्रसंगों से जुड़े पात्र महापुरुषों के स्टेच्यू आ चुके हैं। राजमहल में रंगरोगन, नए झरोखे बनाने, दरवाजे, महल की दीवारों पर भीत्ति चित्रकारी का काम जोरों पर चल रहा है। पुरातत्व धरोहर संरक्षण एवं प्रौन्नति प्राधिकरण द्वारा पेनोरमा के काम पर करीब सवा करोड़ रुपए खर्च हो रहे हैं। इसके लिए राजमहल की मरम्मत करवाई है। दीवारों पर रंगरोगन करवाकर आकर्षक तोरणए पुरानी शैली में सजावट की है। मुख्य गेट को नया बनाया है। महल के कंगूरे व झरोखों पर कांच लगाए हैं। दीवारों, महल के हर कमरे के दोनों तरफ दरबार की आकृतियां उकेरी जा रही है। राजमहल की उल्टी छत पर विशेष सजावट की है। पेनोरमा के लिए महाराणा के जीवन से जुड़े प्रसंगों की प्रतिमाएं बन चुकी है। अभी इनके ऊपर से थैलियां नहीं हटाई है। प्रतिमाओं के माध्यम से महाराणा राजसिंह के जीवन से जुड़े लोगोंए योगदानए उनके काल की घटनाओं का जीवंत चित्रण पेश किया जाएगा। महाराणा कुंभा, महाराणा सांगा, महाराणा प्रताप की वंशावली का भी अंकन भीत्ति चित्रों से किया जाएगा।

जयवर्द्धन

कार्यालय पता : C/O **शक्ति स्पोर्ट्स**, शास्त्री मार्केट कांकरोली,
जिला–राजसमंद, 9414239648, 96729 94705
Email : jaivardhanpatrika@gmail.com

To